हिंदी विश्व

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र

विश्व हिंदी सम्मेलन
मॉरीशस, 18-20 अगस्त, 2018

गोस्वामी तुलसीदास नगर, मॉरीशस | शनिवार, 18 अगस्त 2018 | प्रवेशांक

हिंदी का महाकुंभ आज से

20 देशों के दो हजार से अधिक प्रतिनिधि मॉरीशस पहुंचे, विदेश राज्यमंत्री जनरल वी.के. सिंह ने तैयारियों का जायजा लिया

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की पूर्व संध्या पर विभिन्न सत्रों की जानकारी देते बाएँ से विनोद कुमार मिश्र, उदय नारायण गंगु, अशोक चक्रधर, भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह, प्रीति शरण और गिरीश्वर मिश्र।

गोस्वामी तुलसीदास नगर (मारीशस)। लघु भारत कहे जाने वाले मारीशस में 18 अगस्त 2018 से 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन शुरू होगा। हिंदी का यह महाकुंभ 20 अगस्त 2018 तक स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभागार में चलेगा। विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन मुख्य रूप से भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया जाता है जिसमें इस बार मॉरीशस सरकार स्थानीय आयोजनकर्ता है। 18 अगस्त 2018 को पूर्वाह्न 10 बजे स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभागार में शुरू होनेवाले उद्घाटन समारोह में भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज सम्मेलन की प्रस्तावना रखेंगी और मारीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ का उद्घाटन भाषण होगा। मारीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन स्वागत भाषण करेंगी। सम्मेलन की तैयारियों का जायजा लेने के लिए भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल बी. के. सिंह सिंह सम्मेलन स्थल पर पहुंचे। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल तथा हिंदी के वरिष्ठ कवि केशरीनाथ त्रिपाठी तथा गोवा की राज्यपाल व लेखिका मृदुला सिन्हा ने भी कार्यक्रम स्थल का दौरा किया।

विश्व हिंदी सचिवालय मारीशस के महासचिव विनोद कुमार मिश्र ने बताया कि विश्व हिंदी सम्मेलन में 20 देशों के दो हजार से अधिक प्रतिनिधि भाग लेने के लिए मारीशस पहुंच चुके हैं। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति' रखा गया है। विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' के प्रवेशांक का विमोचन किया जाएगा। विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर पहले की तरह विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा के उत्थान के लिए समर्पित भाव से काम करने वाले भारत के हिंदी सेवियों एवं अंतरराष्ट्रीय विद्वानों को सम्मानित किया जाएगा।

सम्मेलन स्थल पर नेशनल बुक ट्रस्ट, केंद्रीय हिंदी संस्थान, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा समेत कई संस्थाओं द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई है।

मॉरीशस में शुक्रवार को गंगा आरती में भाग लेते पश्चिम बंगाल के राज्यपाल व हिंदी के वरिष्ठ कवि केशरी नाथ त्रिपाठी, गोवा की राज्यपाल व लेखिका मृदुला सिन्हा, विदेश राज्य मंत्री जनरल वीके सिंह तथा अन्य

भारत और मारीशस के शीर्ष नेतृत्व की शुभकामनाएं

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि मॉरीशस में होने वाला यह सम्मेलन हिंदी भाषा के माध्यम से भारत और मॉरीशस की सांझी संस्कृति की सजीव झांकी प्रस्तुत करेगा तथा दोनों देशों के जन आधारित सदियों पुराने संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने अपने संदेश में कहा है कि यह सम्मलेन भारतीय प्रवासी समुदाय को भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से परिभाषित अपनी अस्मिता और भाषा के प्रति आत्मीयता ज्ञापित करने का अवसर प्रदान करेगा| विदेश मंत्री एवं प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री सुषमा स्वराज ने अपने संदेश में कहा कि भारत और मॉरीशस के बीच प्रगाढ़ रिश्ते हैं और वैश्विक पटल पर हिंदी को आगे बढ़ाने में मॉरीशस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसका उदाहरण है कि वर्ष 1976 और 1993 में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस में किया जा चुका है और अब तीसरी बार मॉरीशस में यह आयोजन होने जा रहा है।

मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन ने अपने संदेश में कहा कि पहले के अनुभवों से सिद्ध हुआ है कि जब भी विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन होता है तब यह एक नए मानक के रूप में मील का पत्थर सिद्ध होता है और अगले सम्मेलन को अधिक ऊँचा उठाने की चुनौती सदैव बनी रहती है। वास्तव में, भारत के माननीय प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज के मार्गदर्शन में भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन की सुखद यादें 11वें सम्मेलन के संदर्भ में वैश्विक हिंदी समुदाय की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करती हैं। इन अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु मॉरीशस सरकार और मेरे मंत्रालय ने बहुत पहले से, वर्ष 2016 से ही इस बृहत् आयोजन का कार्य आरंभ कर दिया है।

नरेंद्र मोदी

प्रवीण कुमार जगन्नाथ

सुषमा स्वराज

लीला देवी दुकन लछुमन

अटल बिहारी वाजपेयी की तीन कविताएँ

विश्व हिंदी सम्मेलन
पोर्ट लुई के घाट पर, नवपंडों की भीर।
रोली, अक्षत, नारियल, सुर सरिता का नीर।।
सुरसरिता का नीर, लगा चन्दन का घिस्सा।
भैया जी ने औरों का भी हड़पा, हिस्सा।।
कह कैदी कविराय, जयतु जय शिवसागर जी।
जय भगवती जागरण, निरावरण जय नागर जी।।

गूंजी हिंदी विश्व में
गूंजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।
राष्ट्र संघ के मंच से, हिंदी का जयकार।।
हिंदी का जयकार, हिंद हिंदी में बोला।
देख स्वभाषा-प्रेम, विश्व अचरज से डोला।।
कह कैदी कविराय, मेम की माया टूटी।
भारत माता धन्य, स्नेह की सरिता फूटी।।

घर में दासी
बनने चली विश्व भाषा जो, अपने घर में दासी।
सिंहासन पर अंगरेज़ी है, लखकर दुनिया हाँसी।।
लखकर दुनिया हाँसी, हिंदीदां बनते चपरासी।
अफसर सारे अंगरेज़ीमय, अवधी हों, मद्रासी।।
कह कैदी कविराय, विश्व की चिन्ता छोड़ो।
पहले घर में अंगरेज़ी के गढ़ को तोड़ो।।

अटल बिहारी वाजपेयी
(25 दिसंबर 1924-16 अगस्त 2018)

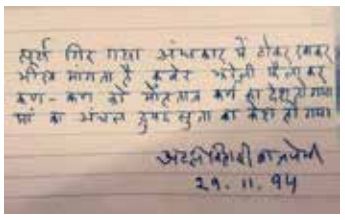

स्मृति शेष : पृष्ठ-8

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में आज के कार्यक्रम

परिसर: गोस्वामी तुलसीदास नगर
सम्मेलन स्थल: स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभागार

परिसर: गोस्वामी तुलसीदास नगर
सम्मेलन स्थल: स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभागार

शनिवार, 18 अगस्त 2018
उद्घाटन सत्र: मुख्य सभागार (अभिमन्यु अनत सभागार)

0930-1000बजे	स्थान- ग्रहण करना (विशिष्ट अतिथियों का आगमन)
1000 बजे	श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का सामूहिक मौन का उद्घोषिका के द्वारा आग्रह
1004 बजे	उद्घाटन- उद्घोषिकाओं द्वारा प्रारम्भिक उद्घोषणाएं (प्रो. कुमुद शर्मा एवं श्रीमती माधुरी रामधारी)
1006 बजे	1. मॉरीशस का राष्ट्रीय गान इसके बाद भारत का राष्ट्रीय गान
1008 बजे	2. दीप प्रज्ज्वलन (विदेश मंत्री एवं शिक्षा मंत्री) वेद मंत्र विदेशी विद्यार्थी, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा
1009 बजे	3. सरस्वती वंदना विदेशी विद्यार्थी, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा
1012 बजे	4. हिंदी गान (महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा)
1020 बजे	5. सम्मेलन लोगो पर एनिमेशन फिल्म का प्रदर्शन
1033 बजे	6. स्वागत भाषण: श्रीमती लीला देवी दुकन.लछुमन, माननीय शिक्षा मंत्री मॉरीशस सरकार द्वारा
1043 बजे	7. सम्मेलन प्रस्तावना: श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार द्वारा
1055 बजे	8. उद्घाटन उद्घोधन: श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ, माननीय प्रधानमंत्री, मॉरीशस द्वारा
1100 बजे	9. डाक टिकट का लोकार्पण माननीय प्रधानमंत्री मॉरीशस द्वारा
1102 बजे	10. पुस्तकों का लोकार्पण: I. सम्मेलन स्मारिका, 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन (श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ, माननीय प्रधानमंत्री मॉरीशस द्वारा) II. गगनांचल विशेषांक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की पत्रिका (श्रीमती मृदुला सिन्हा, माननीय राज्यपाल, गोवा, भारत द्वारा) III. दुर्गा पत्रिका, मॉरीशस (श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, माननीय राज्यपाल, पश्चिम बंगाल, भारत द्वारा) IV. राजभाषा भारती पत्रिका विशेषांक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की पत्रिका (श्रीमती सुषमा स्वराज, माननीय विदेश मंत्री, भारत सरकार द्वारा) V. विश्व हिन्दी साहित्य, पत्रिका, विश्व हिन्दी सचिवालय की पत्रिका (श्रीमती लीला देवी दुकन.लछुमन, माननीय शिक्षा मंत्री मॉरीशस सरकार द्वारा) अभिमन्यु अनत जी की प्रकाशनाधीन पुस्तक "प्रिया" (श्री एम.जे. अकबर, माननीय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा) VI. 'भोपाल से मौरिशस तक' (जनरल (डॉ.) वी.के. सिंह (सेवानिवृत्त), माननीय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा)
1127 बजे	11. आभार ज्ञापन: जनरल (डॉ.) वी.के. सिंह (सेवानिवृत्त), माननीय विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा)
1130-1200 बजे	जलपान

शनिवार, 18 अगस्त 2018

1200-1230 बजे	श्रद्धांजलि सभा श्रद्धांजलि अर्पण वक्ता : माननीया विदेश मंत्री – (02 मिनट) मॉरिशस के सम्मानित अतिथि – (02 मिनट) माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी , राज्यपाल ,पश्चिम बंगाल- 02 मिनट माननीया श्रीमती मृदुला सिन्हा, राज्यपाल, गोआ 02 मिनट श्री भर्तिहरी महताब - 02 मिनट श्री अजमीरा सीताराम नायक - 02 मिनट श्री अशोक चक्रधर - 02 मिनट श्री गजेन्द्र सोलंकी - 02 मिनट मॉरिशस प्रतिनिधि – 1 (02 मिनट) मॉरिशस प्रतिनिधि – 2 (02 मिनट) अन्य विदेशी विद्वानों द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजलि
1230-1400 बजे	दोपहर का भोजन
1400–1630 बजे	समानांतर सत्र 1 : भाषा और लोक संस्कृति के अंत:संबंध (अध्यक्ष: श्रीमती मृदुला सिन्हा, माननीय राज्यपाल, गोवा, भारत) (सह-अध्यक्ष: डॉ. सरिता बुद्दू, मॉरीशस) समानांतर सत्र 2 : प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास (अध्यक्ष: श्री किरेन रिजिजु, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार) (सह-अध्यक्ष: श्री प्रह्लाद रामशरण, मॉरीशस) प्रौद्योगिकी से संबंधित उत्पादों का लोकार्पण श्री किरेन रिजिजु, माननीय गृह राज्य मंत्री द्वारा समानांतर सत्र 3 : हिन्दी शिक्षण में भारतीय संस्कृति (अध्यक्ष: श्री उदय नारायण गंगू, मॉरीशस) (सह-अध्यक्ष: डॉ. विमलेश कांति वर्मा) समानांतर सत्र 4 : हिन्दी साहित्य में संस्कृति चिंतन (अध्यक्ष: डॉ. राजरानी गोबिन, मॉरीशस) (सह-अध्यक्ष: डॉ. हरीश नवल) श्री अभिराम भडकमकर द्वारा रचित "बाल गंधर्व" का लोकार्पण डॉ. राजरानी गोबिन द्वारा
1630-1700 बजे	जलपान
1700-1830 बजे	समानांतर सत्र 1 : भाषा और लोक संस्कृति के अंत:संबंध (जारी) (अध्यक्ष: श्रीमती मृदुला सिन्हा, माननीय राज्यपाल, गोवा, भारत) (सह-अध्यक्ष: डॉ. सरिता बुद्दू, मॉरीशस) समानांतर सत्र 2 : प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास (जारी) (अध्यक्ष: श्री किरेन रिजिजु, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार) (सह-अध्यक्ष: श्री प्रह्लाद रामशरण, मॉरीशस) समानांतर सत्र 3 : हिन्दी शिक्षण में भारतीय संस्कृति (जारी) (अध्यक्ष: श्री उदय नारायण गंगू, मॉरीशस) (सह-अध्यक्ष: डॉ. विमलेश कांति वर्मा) समानांतर सत्र 4 : हिन्दी साहित्य में संस्कृति चिंतन (जारी) (अध्यक्ष: डॉ. राजरानी गोबिन, मॉरीशस) (सह-अध्यक्ष: डॉ. हरीश नवल)
1900 बजे	रात्रि भोज

संपादकीय

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव के रूप में 'हिंदी विश्व' बुलेटिन का प्रवेशांक आपके सामने रखते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन के क्रम में विश्व हिंदी परिवार से जुड़ने का इससे खूबसूरत अवसर और क्या हो सकता है? हिंदी की यह इकलौती द्विपक्षीय संस्था है जिसने हिंदी की संस्कृति को जीवंत बनाए रखने के लिए कृषि-कर्म जैसा बना दिया है जहाँ खेत की जुताई, सिंचाई एवं बीजबपन निरंतर चलता रहता है ताकि उसकी उर्वराशक्ति बनी रहे। यही जिजीविषा हम मॉरीशस की किसान-संस्कृति में भी तो देखते हैं।

सचिवालय हिंदी जगत के सपनों की फ़सल तैयार करने में कृतसंकल्प है। यह हिंदी की समृद्ध परम्परा तथा भाषायी और साहित्यिक विरासत की कुशल अभिव्यक्ति के साथ-साथ भौगोलिक विस्तार को नया आयाम दे रहा है तथा वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक संबंधों की मज़बूत कड़ी बन चिंतन तथा सृजन के समानान्तर द्वार पर दस्तक भी।

आज हिंदी वैश्वीकरण की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपनी नई राहों की अन्वेषिका बनकर आत्मीय बनाने की शाश्वत प्रकृति का सदुपयोग कर विश्वास की अनंत संभावनाओं की आकाश गंगा की निर्मिति में अग्रसर है।

सूचना और प्रौद्योगिकी ने हिंदी के क्षेत्र में रोज़गार के नए अवसर दिए हैं तथा कई गवाक्ष भी खोल दिए हैं। आवश्यकता है 'कूप मंडूक' वृत्ति का त्याग और नवतकनीकी ज्ञानार्जन के द्वारा हिंदी को 'रोटी', 'रोज़गार' और 'माध्यम' की भाषा बनाना।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भाषा और भाव की एकात्मकता बलवती हो रही है। ऐसे में ज़रूरत इस बात की है कि मानक और मानदण्ड पुनर्निर्धारित किए जाएँ जो सर्वस्वीकृत भी हों। 'शुचिता' और 'शुद्धतावादी' सोच का निर्मोक उतार फेंकना होगा, 'ग्रहण' और 'त्याग' के विवेक को जाग्रत करना होगा। सद्भावना, समरसता और समन्वयात्मकता की त्रिगुणात्मिका के आईने से विश्व हिंदी को देखना होगा। मुक्तिबोध के शब्दों में, "अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने होंगे। तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब। पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार।" उम्मीद है कि प्रवेशांक की सामग्री आपको पसंद आएगी।

विश्व हिंदी सम्मेलन की स्वर्णिम यात्रा

मॉरीशस में तीसरी बार

डॉ.संयुक्ता भवन रामसारा

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन :- 1975 में भारत में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10-14 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। जिसका बोधवाक्य वसुधैव कुटुंबकम था। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से सम्बन्धित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी उस समय महाराष्ट्र के वित्त, नियोजन व अल्पबचत मन्त्री थे। सम्मेलन के मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधानमन्त्री श्री शिवसागर रामगुलाम थे जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आए एक प्रतिनिधिमण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सर शिवसागर रामगुलाम ने अपने भाषण में हिंदी के संबंध में कहा कि हिंदी की लोकप्रियता भारत में तो है ही लेकिन हमारे लिए इस भाषा की एक ख़ास विशेषता है। हमें अनेक एशियाई-अफ्रीकी देश इस भाषा को एक अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करते हैं। सभी ने नागपुर सम्मेलन में यह देखा कि यूरोप, अमरीका, कनाडा, एशिया, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों से आए लोग किस प्रकार धारा-प्रवाह हिंदी में भाषण कर रहे थे। विदेशियों को भी इस बात की प्रसन्नता थी कि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर वे अपने विचारों का आदान-प्रदान इस भाषा के माध्यम से कुशलतापूर्वक कर रहे थे। इस सम्मेलन ने हिंदी के प्रति जो कुछ शंकाएँ लोगों के मन में थीं, उन्हें दूर किया और पहली बार उसी मंच से यह सिद्ध हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए हिंदी एक सर्वथा सशक्त एवं सक्षम भाषा है। उस सम्मेलन से हिंदी की गौरववृद्धि के साथ-साथ एक विश्व हिंदी परिवार की कल्पना साकार हुई और पहली बार एक विपुल जन-समुदाय ने यह महसूस किया कि हिंदी के विकास तथा प्रचार की संभावनाएँ अपार हैं।सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

1- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।

2- वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो।

3- मॉरीशस में विश्वस हिंदी सचिवालय की स्थापना हो।

4- विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यन्त विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाए।

दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन :- दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 28-30 अगस्त 1976 के बीच सम्पन्न हुआ था। इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष मॉरीशस के प्रधानमन्त्री डॉ॰ सर शिवसागर रामगुलाम थे। इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भारत के तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने की थी। आभार प्रदर्शन मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम ने किया था। सम्मेलन में भारत से 23 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया था।

तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन :- तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 28-30 अक्टूबर 1983 में भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित हुआ। इसमें भी वसुधैव कुटुंबकम बोधवाक्य रखा गया. भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया था। सम्मेलन के लिए बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आए प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल 6566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आए 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था, "भारत के सरकारी कार्यालयों में हिंदी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।"

चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन :- 2-4 सितंबर 1993 में मॉरीशस के पोर्ट लुई में हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया. इसका उद्घाटन मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने किया था। समापन समारोह की अध्यक्षता मॉरीशस के उपराष्ट्रपति रवींद्र घरबरन ने की थी। 17 साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुकेश्वर चुनी ने सम्हाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गए प्रतिनिधिमण्डल के नेता श्री मधुकर राव चौधरी थे। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में सभी के आदर सत्कार का बहुत ध्यान दिया जा रहा था। वहाँ के मंत्री सभी प्रतिनिधियों से बहुत घुल-मिल गए थे।

पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 1996 के साल 4-8 अप्रैल तक त्रिनिडाड एवं टुबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में हुआ था। इसके उद्घाटन समारोह की त्रिनिडाड एवं टुबैगो के प्रधानमंत्री वासुदेप पांडेय ने की थी. इस सम्मेलन का विषय अप्रवासी भारत और हिंदी था। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम थे। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद थे। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिंदी। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे - हिंदी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिंदी की स्थिति एवं कम्प्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- साल 1999 के सितंबर माह में 14-18 तक ब्रिटेन के लंदन में छठवाँ हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत तत्कालीन एनडीए सरकार में विदेश राज्य मंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने किया था। हिंदी और भावी पीढ़ी इस सम्मेलन का मुख्य विषय था। यू०के० हिंदी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम भारतीय भाषा संगम, यॉर्क ने मिलजुल कर इसके लिए राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ. पद्मेश गुप्त थे। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - हिंदी और भावी पीढ़ी। प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र थे। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह हिंदी को राजभाषा बनाये जाने के 50वें वर्ष में आयोजित किया गया। यही वर्ष सन्त कबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल थे। इस सम्मेलन में अमरीका में विश्व हिंदी न्यास के रामदास चौधरी, दक्षिण अफ्रीका के. वी. रामविलास, पोलैंड की डॉ. दानिता स्वासीक, मारीशस के मित्र रामदेव धुरंधर, तजाकिस्तान के एच. रजारोव, फ्रांस के प्रो. एनीमोतो, ब्रिटेन की अचला शर्मा, चेक गणराज्य के डॉ. स्वतीस्लाव कोस्तिक, म्यांमार के ऊपार्गो और चीन के प्रो येंग हांगयूनद को भी सम्मानित किया गया है।

सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सुदूर सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में 5 जून से 9 जून 2003 के मध्य हुआ था। सूरीनाम के राष्ट्रपति रोनाल्डो रोनाल्ड वेनेत्शियान ने सातवें सम्मेलन का शुभारंभ किया था। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिंदी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक श्री जानकीप्रसाद सिंह थे। इसका केन्द्रीय विषय था - विश्व हिंदी नई शताब्दी की चुनौतियाँ। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें 12 से अधिक देशों के हिंदी विद्वान व अन्य हिंदी सेवी सम्मिलित हुए। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में दो बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। पहला हमारी सरकार संयुक्त राष्ट्रसंघ में इसे मान्यता दिलाए, दूसरे सभी लोग सरकारी और रोजमर्रा के जीवन में हिंदी को अपनाएँ और अपने बच्चों और विदेशियों को हिंदी प्रयोग में प्रोत्साहन दें।

आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- 13-15 जुलाई 2007 में अमरीका के न्यूयार्क में आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया गया था। सम्मेलन का मुख्य विषय विश्व मंच पर हिंदी था। आठवें सम्मेलन का उद्घाटन संयुक्त राष्ट्र के सभागार में हुआ था। जिसमें स्वागत भाषण भारत के राजदूत रोनेन सेन ने दिया था। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की थी। इसके लिए एक विशेष जालस्थल (वेवसाइट) का निर्माण भी किया गया। इसे प्रभासाक्षी.कॉम के समूह सम्पादक बालेन्दु शर्मा दाधीच के नेतृत्व वाले प्रकोष्ठ ने विकसित किया था।

नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन :- नौंवा हिंदी सम्मेलन 22-24 सितंबर 2012 को दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग में हुआ था। भारत की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ इस सम्मेलन का मुख्य विषय था। इस सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री प्रवीण गोर्धन और विशेष अतिथि मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मुकेश्वर चुनी ने शिरकत की थी। इस सम्मेलन में 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग 300 भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 12 सितंबर 2015 तक भारत की हृदयस्थली मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल (मध्य प्रदेश) में हुआ था। जोहांसबर्ग में हुए नौवें सम्मेलन में ही निर्णय लिया गया था कि अगला विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में होगा।पहली बार हिंदी भाषा पर केंद्रित इस सम्मेलन में 12 विषयों पर विचार हुआ। तीन दिन हुई अलग-अलग चर्चाओं के बाद इनसे जुड़े परिणाम भी सम्मेलन में पेश किए गए जिन पर अमल के लिए केंद्र सरकार एक समीक्षा समिति बनाएगी। सम्मेलन में सरकार की ओर से यह आश्वासन दिया गया कि जो सिफारिशें आई हैं उन पर हर संभव अमल होगा। तीन दिन चले इस सम्मेलन का समापन केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने किया। इस सम्मेलन में देश और विदेश के हिंदीसेवियों को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित भी किया गया। विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह में देश-विदेश के 34 हिंदी साहित्यकारों को विश्व हिंदी सम्मान प्रदान किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत के एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र – भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान विदेशी तथा भारतीय विद्वानों और विचारकों को हिंदी भाषा के विस्तार से संबंधित विभिन्न विकल्पों पर विचार-विमर्श करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन :- ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से 18-20 अगस्त 2018 तक मॉरीशस में आयोजित किया जा रहा है। ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन को मॉरीशस में आयोजित करने का निर्णय सितंबर 2015 में भारत के भोपाल शहर में आयोजित दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था

विश्व हिंदी सम्मेलन से निकला विश्व हिंदी सचिवालय

प्रो. विनोद कुमार मिश्र

विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी की वैश्विक यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है जो भारत व मॉरीशस सरकार की एक द्विपक्षीय अंतरराष्ट्रीय संस्था के रूप में पिछले एक दशक से हिंदी प्रचार-प्रसार में संलग्न है। यह संस्था 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के मंथन का परिणाम है। सम्मेलन में मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव रखा था जिसका समर्थन तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा किया गया। इस प्रस्ताव को 1976 में मॉरीशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन में साकार रूप दिया गया और मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना का प्रस्ताव दृढ़ संकल्प के साथ पारित हुआ। 1996 में मॉरीशस सरकार ने सचिवालय के निर्माण से सम्बंधित कार्यों के लिए डॉ. सरिता बुद्धु को शिक्षा मंत्रालय में बतौर सलाहकार नियुक्त किया। इसके बाद मॉरीशस स्थित भारतीय उच्चायोग के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय की इकाई का गठन किया गया। 20 अगस्त 1999 को दोनों सरकारों की ओर से सचिवालय के उद्देश्यों, संचालन एवं वित्तपोषण संबंधी एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए जिसके अंतर्गत मॉरीशस सरकार की ओर से सचिवालय निर्माण हेतु भूमि का आबंटन हुआ तथा भारत सरकार की ओर से भवन के प्रारूप तथा निर्माण के खर्च की ज़िम्मेदारी ली गई।

17 सितम्बर 2001 को सचिवालय का अस्थायी कार्यालय किराए के एक भवन के रूप में बना और कार्य आरंभ हुआ। अद्यावधि इसी भवन से सचिवालय की गतिविधियों का संचालन हो रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय का शिलान्यास नवंबर, 2001 में भारत के तत्कालीन मानव संसाधन, विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री माननीय श्री मुरली मनोहर जोशी द्वारा फ़ेनिक्स, मॉरीशस में किया गया। 12 नवम्बर 2002 को मॉरीशस की नेशनल असेम्बली द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम-2002 पारित किया गया तथा 21 नवम्बर 2003 को मॉरीशस तथा भारत सरकार के बीच एक द्विपक्षीय करार पर हस्ताक्षर किए गए। 12 सितम्बर 2005 को नेशनल असेम्बली द्वारा पारित अधिनियम की औपचारिक उद्घोषणा की गई। मॉरीशस की ओर से प्रथम महासचिव की नियुक्ति 18 जनवरी 2007 को की गई तथा 11 फ़रवरी 2008 से विश्व हिंदी सचिवालय ने औपचारिक रूप से कार्य आरम्भ किया। अपने स्थापना वर्ष से सचिवालय लगातार अपनी वैश्विक गतिविधियों द्वारा हिंदी को विश्व भाषा बनाने का मार्ग प्रशस्त करता आ रहा है। 12 मार्च, 2015 को भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ किया गया। 8 अक्टूबर 2016 को भूमि पूजा की गई तथा निर्माण कार्य आरंभ हुआ। दोनों देशों के आपसी सहयोग से सचिवालय का नवनिर्मित परिसर बन कर तैयार हुआ एवं 13 मार्च 2018 को मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ की गरिमामयी उपस्थिति में भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी के करकमलों से इसके मुख्यालय का उद्घाटन हुआ। इस वर्ष सचिवालय नौ सोपानों को पार कर दसवें सोपान पर कदम रख चुका है। इन बीते वर्षों में सचिवालय ने कामयाबी की कई इबारतें लिखी हैं किंतु बहुत कुछ लिखा जाना बाकी है। वर्ष 2018 हिंदी विश्व के लिए, सचिवालय के लिए और मॉरीशस के लिए ऐतिहासिक होगा। 18-20 अगस्त को विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन सहित कई और नए अध्याय लिखे जायेंगे तथा हिंदी के स्वर्णिम इतिहास एवं उसकी गौरव गाथा-गायन का सम्पूर्ण हिंदी जगत साक्षी बनेगा।

विश्व हिंदी सचिवालय के भवन का उद्घाटन करते भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

उद्देश्य

विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम 2002 के अनुसार इसका उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रोन्नत करना, संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करना तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का संवर्धन एवं विकास करना रहा है।

लक्ष्य

भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विस्तार करना भी सचिवालय का अभीष्ट है। इसके अतिरिक्त विश्व हिंदी सम्मेलनों को सांस्थानिक स्वरूप प्रदान करने में सहयोग के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर हिंदी की गतिविधियों का समन्वयन, विभिन्न सरकारी, स्वायत्तशासी एवं स्वयंसेवी संस्थानों को रचनात्मक एवं अकादमिक सहयोग प्रदान करते हुए हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण का दायरा, परिमाण और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सतत सहयोग करना, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए कारगर नीतियों का निर्माण, स्तरीय प्रकाशन, सूचना तथा संचार तकनीकों के माध्यम से हिंदी से जुड़ी सूचनाओं को विश्व भर में प्रचारित एवं प्रसारित करना सचिवालय का लक्ष्य रहा है।

विश्व हिंदी सचिवालय वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न भारत और मॉरीशस सरकार की एक द्विपक्षीय संस्था है। कई विश्व हिंदी सम्मेलनों में हुए विचार-विमर्श के फलस्वरूप मॉरीशस और भारत के बीच एक द्विपक्षीय समझौते के आधार पर मॉरीशस की विधान सभा में एक अधिनियम पारित करते हुए सचिवालय की स्थापना की गई।

प्रशासनिक ढांचे का गठन

विश्व हिंदी सचिवालय के कुशल संचालन हेतु एक शासी परिषद् (Governing Council) तथा एक कार्यकारिणी बोर्ड (Executive Board) तथा तीन उपसमितियों के गठन व मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में एक महासचिव व उनके सहयोगी के रूप में एक उपमहासचिव की नियुक्ति का प्रावधान है। फिलहाल सचिवालय में महासचिव व उपमहासचिव सहित कुल १० कर्मचारी कार्यरत हैं तथा भविष्य में कुल संख्या लगभग तीस होगी।

अकादमिक कार्यक्रम व गतिविधियाँ

सचिवालय निरंतर हिंदी में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, गोष्ठियों और सामूहिक चर्चाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कवि-सम्मेलनों आदि का आयोजन करता रहा है। मल्टीमीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी में शोध करने और हिंदी लेखकों, कवियों, विद्वानों, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा हिंदी के संवर्धन में लगे गैरसरकारी संगठनों के लगभग 1000 डाटा-बैंक तैयार हैं। 2008 में आधिकारिक कार्यारम्भ से सचिवालय अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु नियमित रूप से निर्धारित गतिविधियों का आयोजन करता आया है। 2008 से सचिवालय एक त्रैमासिक सूचना पत्र 'विश्व हिंदी समाचार' का प्रकाशन करता है। इसमें दुनिया भर में हिंदी से संबंधित कार्यक्रमों व गतिविधियों की जानकारियाँ व रिपोर्ट प्रकाशित होती हैं। 2009 से सचिवालय प्रतिवर्ष एक शोध पत्रिका 'विश्व हिंदी पत्रिका' का प्रकाशन करता आ रहा है जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, हिंदी के उद्भव और विकास, हिंदी के क्षेत्र में हो रही गतिविधियों तथा अनुसंधान, हिंदी शिक्षण और अधिगम से संबंधित शोधपरक गतिविधियों से परिचय होता है। यह पत्रिका विचार तथा शोध के आदान-प्रदान के लिए विशेष मंच प्रदान करती है। पत्रिका के सभी अंक सचिवालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। सचिवालय एक अन्य वार्षिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' का शीघ्र ही प्रकाशन करने जा रहा है, जिसमें साहित्यिक विधाओं - कविता, कहानी, नाटक, एकांकी सहित गद्य की अन्य विधाओं को स्थान दिया जायेगा। विश्व भर से रचनाएँ आमंत्रित की गयी हैं।

विश्व हिंदी दिवस व अन्य समारोह

सचिवालय के प्रमुख कार्यों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन शामिल है जो 2009 से संस्था द्वारा प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता रहा है। इस अवसर पर विदेश से एक हिंदी विद्वान द्वारा बीज वक्तव्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, हिंदी के प्रसार व प्रगति से संबंधित प्रस्तुतियाँ आदि होती हैं।

सचिवालय 2009 से प्रतिवर्ष 11 फ़रवरी को अपना आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाता आ रहा है। इस अवसर पर भारत से एक हिंदी विद्वान वक्तव्य प्रस्तुति व कार्यशाला संचालन आदि के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी दिवस के सफल आयोजन हेतु विश्व भर की अनेक संस्थाओं को अनुदान प्रदान किया जाता है।

अन्य गतिविधियाँ

उक्त प्रकाशनों व समारोहों के अतिरिक्त विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी प्रचार संस्थाओं व व्यक्तियों के सहयोग तथा हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनेक योजनाएँ चलाता आ रहा है। सचिवालय हिंदी साहित्य सहित अनेक विषयों भाषा-शास्त्र, सूचना-प्रौद्योगिकी, जन-संचार, शिक्षण पर सम्मेलनों, कार्यशालाओं, मॉरीशस व अन्य देशों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन भी करता रहा है। विगत वर्षों में सचिवालय ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी शिक्षण में प्रौद्योगिकी को केंद्र में रखते हुए कार्यशालाओं व अनेक संगोष्ठियों का आयोजन किया है। सृजनात्मक लेखन की ओर युवकों को प्रेरित करने के उद्देश्य से सृजनात्मक लेखन पर भी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। विचार मंच कार्यक्रम के द्वारा सचिवालय विचार, संचार व व्यवहार के नए गवाक्ष खोलने में सक्षम रहा है। सचिवालय वार्षिक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करता रहा है तथा अब तक सचिवालय विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध, वाचन, लघुकथा, कविता, एकांकी आदि कई प्रतियोगिताओं का आयोजन कर चुका है। सचिवालय भाषाविदों और हिंदी समाज, स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ संचार अभियानों में भी सक्रिय है और समय-समय पर इन सभी को सहयोग, मार्गदर्शन व सलाह प्रदान करता है। सचिवालय द्वारा हिंदी प्रचार संबंधी विविध योजनाओं तथा हिंदी दिवस के आयोजन के लिए विश्व की कुछ संस्थाओं को प्रत्येक वर्ष आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया जाता है। हिंदी के विविध पक्षों को जनता के समक्ष उभारने व प्रचलित करने के उद्देश्य से सचिवालय द्वारा विशेष अवसरों पर संगीत कार्यक्रम, नाटक मंचन, कवि-सम्मेलन आदि का भी आयोजन होता रहा है। वेबसाइट व विश्व हिंदी सचिवालय से जुड़ने तथा संस्था के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए सचिवालय की वेबसाइट vishwahindi.com तथा फ़ेसबुक पृष्ठ https://www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/ देखा जा सकता है।

ऑनलाइन डेटाबेस

सचिवालय का एक ऑनलाइन डेटाबेस vishwahindidb.com भी है जिसपर विश्व भर के हिंदी विद्वानों एवं संस्थाओं के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

भावी परियोजनाएँ

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के विकास की बेहतर समझ के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से विश्व हिंदी भाषा और साहित्य का वैश्विक इतिहास लेखन प्रस्तावित है। हिंदी के किसी कवि, लेखक, विचारक और चिन्तक का कहीं भी स्मारक दिखाई नहीं देता। देश के स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्रीय चेतना जगाने में जिन कवियों और लेखकों के अवदानों को रेखांकित किया जाता है, उन्हीं के नाम पर कहीं कोई स्मारक दिखाई नहीं देता। अतः विश्व हिंदी सचिवालय ने एक विश्व हिंदी संग्रहालय के निर्माण का प्रस्ताव रखा है, जिसमें कृति एवं कृतिकार सहित, हिंदी जगत के सभी प्रचारकों व सेवियों के कार्यों की झाँकी होगी। विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी को समग्रता में समझने और समझाने के क्रम में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण में संलग्न प्रतिष्ठित व्यक्तियों, संस्थाओं आदि का संजाल (नेटवर्क) विकसित करने का प्रयास तथा उनके साथ समझौता ज्ञापन किया जायेगा। ऑनलाइन एवं दूरस्थ पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अध्ययन केन्द्र की स्थापना, विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण की मानक सामग्री-निर्माण में सहयोग करना, दुनिया भर की भाषाओं में संचित ज्ञान की धरोहरों का हिंदी अनुवाद एवं प्रकाशन के क्षेत्र में सहयोग किया जायेगा। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला आदि के आयोजनों के माध्यम से समझ और संवाद को विकसित करना, हिंदी का अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के साथ नेटवर्क संयोजन एवं अन्तःसंपर्क के द्वारा समन्वयन का प्रयास करना, वैश्विक ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में हिंदी में स्तरीय सामग्री निर्माण के द्वारा ज्ञान के नए क्षितिज के उदय में सहयोग करना, हिंदी के माध्यम से अन्तरानुशासनिक ज्ञान-प्रणाली के संवर्धन में सहयोग तथा सचिवालय को शैक्षिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी दस्तावेज़ों, संसाधनों एवं सूचनाओं के व्यापक, सक्रिय एवं बहुआयामी आदान-प्रदान के लिए एक अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सह विमर्श केंद्र की स्थापना का भी प्रस्ताव है।

मुद्रक: काते प्रिंटिंग लि., मॉरीशस
प्रकाशक: विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस
संपादक: प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादन-सहयोग: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

मॉरीशस में 'बैठका' से निकली हिंदी की स्रोतधारा

राजेश कुमार उदय

मॉरीशस हिंद महासागर के बीच विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों की एक प्रयोगशाला के समान है।' आचार्य काका कालेलकर का यह कथन सर्वोपरि सत्य है। (विश्व हिंदी पत्रिका विशेषांक 2011 पृष्ठ 27)। अतएव यह पुष्ट होता है कि नाना प्रकार की संस्कृतियों के जनों ने अपने अपने समाज की स्थापना की। फलत: यहाँ के बहुजातीय समाज में सह-अस्तित्व की भावना का पालन करते हुए विरासत में प्राप्त अपने धर्म, संस्कृति तथा भाषा की पूर्ण रक्षा हेतु सक्रिय कार्य करते रहे हैं। मॉरीशस में अनेक भाषाओं का प्रचलन है। अंग्रेज़ी और फ्रेंच के बाद जिस भाषा को सर्वाधिक महत्व मिला है – वह हिंदी है। हिंदी पूर्णत: एक वैज्ञानिक भाषा है जिसमें प्रौद्योगिकीय कौशल भी समाविष्ट है। मॉरीशस में, हिंदी भाषा को उज्ज्वल स्वरूप और उनकी वैश्विक गरिमा पर अनेक लोगों ने लिखा है। उल्लेखनीय यह है कि मॉरीशस में हिंदी की उत्पत्ति और उनका जन्म स्रोत बैठका ही है। कैसे मॉरीशस में हिंदी भाषा की उत्पत्ति, संघर्ष व विकास में बैठका की विशेष भूमिका रही – विषय का मूल केंद्र है।

भारतीय आप्रवासियों का पदार्पण जब मॉरीशस भूमि में सन 1834 हुआ तो वे अपने साथ अपनी भाषा, संस्कृति, भारतीय सभ्यता, धर्म एवं परम्परा साथ लेते आए थे। यदि मॉरीशस के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की उज्ज्वल स्थिति को देखें, तो इसके पीछे इस भाषा का सतत संघर्ष रहा है। आज मॉरीशस में हिंदी भाषा का स्थान विशेष एवं अग्रगण्य इसलिए है, क्योंकि इसके पुष्पित, पल्लवित होने का एक बड़ा ऐतिहासिक कारण है। मॉरीशस के इतिहास पर नज़र दौड़ाए तो चार सौ वर्षीय यह इतिहास अपने आप में अत्यंत विस्तृत, विराट परंतु रचनात्मक है। इसी विराटता एवं रचनात्मकता के धरातल पर हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार होने में उसे एक मंच मिला। हमारे भारतीय पूर्वजों ने उसी मंच को 'बैठका' नाम से अभिहित किया।

'बैठका' की व्युपत्ति 'बैठना' शब्द से हुई। बैठका के शाब्दिक अर्थ में एक सांस्कृतिक वैभव है, बैठका से एक इतिहास जुड़ा हुआ है। मॉरीशसीय हिंदू समाज में यह शब्द न केवल सर्वप्रचलित है; अपितु यह एक सांस्कृतिक जीवन से जुड़ा हुआ है। जिस जगह पर भारतीय मज़दूर बैठते थे उसी स्थान को हम 'बैठका' कहते हैं। बैठका अपने सच्चे अर्थ में एक सामाजिक केंद्र था जहाँ पर भारतीय आप्रवासी बैठकर अपने दिनचर्या व सुख-दु:ख बांटते थे। बैठका भारतीय आप्रवासियों का एक सर्वोदय स्रोत रहा। बैठका-व्यवस्था पर यदि दृष्टिपात करें तो भारत के बिहार प्रांत के कुछ स्थलों पर यह व्यवस्था रही। हमारे अधिकांश पूर्वज भारत के बिहार प्रांत से आए हुए थे तो वे अपने साथ उस व्यवस्था को भी साथ लाए। अत: मॉरीशस में उस व्यवस्था को क्रियान्वित करने में भातवंशियों का साहसिक प्रयास रहा। (अजामिल माताबदल से साक्षात्कार में इस जानकारी की पुष्टि हुई।) बैठका में हिंदी की पढ़ाई के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा भी प्रदान किया जाता था। धार्मिक शिक्षा के केंद्र होने की वजह से इन बैठकाओं को 'मठिया' भी कहा जाता था। (वसंत – आप्रवासी विशेषांक अंक 41, पृष्ट 14)। बैठकाओं का आविर्भाव बीसवीं सदी के उस आरंभिक चरण में हुआ जब भारतीय आप्रवासियों को यह लगा कि शिक्षा के लिए एक अलग से कोई कमरा होना नितांत आवश्यक है, जहाँ पर वे हर समय हिंदी शिक्षण या बटोर के लिए खुला रहे। (दीपक नोबिन के सौजन्य से प्राप्त जानकारी) उस समय बैठका निर्माण हेतु तन, मन और धन समर्पित करने में कोई झिझक नहीं थी। बैठका के निर्माण कार्य के अंतर्गत मरम्मत, लिपाई- पुताई आदि एक मैत्रीपूर्ण व पारिवारिक वातावरण में सम्पन्न होता था।

भारतीय आप्रवासी जैसी मानव-जाति के संपूर्ण इतिहास में बैठका एक बहुप्रयोजनीय संस्था भी थी। बैठका घर के बाहर जाकर बैठने के स्वाभाविक प्रयोजन को पूरा करता था और यों हर शाम बैठका जाना एक सामाजिक कर्तव्य बन गया था। बैठका में जाकर बातें-हँसी मज़ाक करते, चर्चा और वाद – विवाद करते और अपनी जिज्ञासाओं का शमन करते। बैठका में कुछ लोग अपनी शंकाओं के समाधान के लिए प्रश्न करते थे और कुछ लोग केवल चुपचाप बैठे ध्यान से सुनते रहते थे। तोता –मैना, सुख सागर, प्रेम सागर, अकबर- बीरबल आदि लोक कथाओं का श्रवण करना बैठकाओं की लोक संस्कृति की भाँति थी । (प्रह्लाद रामशरण द्वारा लिया गया साक्षात्कार)

इसके उपरांत ऐसे हिंदी अध्यापक थे जो खेत में कड़ी धूप में परिश्रम करने के पश्चात शाम को जब घर लौटते थे तो स्नान करने के बाद बड़ी तन्मयता और श्रद्धा भाव के साथ बैठका में पढ़ाने जाते थे। प्रारंभिक काल में बैठकाओं में 'बारह खड़ी' की पढ़ाई होती थी। 'बारह खड़ी' हिंदी अक्षरों को सीखने की एक शिक्षण विधि है। वर्णमाला और बारह खड़ी के ज्ञान के बाद संयुक्ताक्षर और शब्द-रचना की जानकारी दी जाती और तब विद्यार्थी पशु-पक्षियों की छोटी–मोटी कहानियाँ पढ़ने लगते और अंत में रामायण बाँचते थे। इसके अतिरिक्त, छात्र गणित भी हिंदी के माध्यम से सीखते थे। अत: यह स्पष्ट है कि हिंदी भाषा के विस्तार और लोकप्रियता में बैठका की विलक्षण भूमिका रही है।

बच्चे नंगे पाँव ही बैठका आ जाते थे। उस समय बैठका में पटसन की चटाई पर पालथी मारकर हिंदी की पढ़ाई सुगमतापूर्वक होती थी। अभिभावक शिक्षा संबंधी सामग्री खरीदने में असमर्थ थे क्योंकि उस समय जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही कितना कठिन था। बच्चे इस विकट परिस्थिति से हताश न होकर वे अपनी शिक्षण सामग्री स्वयं बनाते थे। पेड़ का कोई स्थूल अंग काटकर उसे सुखाया जाता था – इसे काठ भी कहा जाता है। काठ को एक बढ़ई को दिया जाता था। उसके ऊपरी भाग में तीन अंगूल चौड़ी मूठ होती थी जिसमें एक छेद किया जाता था। छेद में रस्सी का एक फंदा होता था जो टांगने के काम आता था। नई पाटी की दोनों सतह पर घंटों निरंतर रूप से कोयला घिसा जाता था और बोतल की पेंदी का उपयोग इसलिए होता था जिससे पाटी संपूर्णत: काली व चिकनी हो जाए। पाटी पर लिखने के लिए खड़िया को छुरी से रेतकर बना लिया जाता था फिर उसमें पानी मिलाकर स्याही बनाई जाती थी। सरकंडे को काटकर एक पैनी कलम बनाकर और खड़िया के घोल में डुबो डुबोकर पाटी पर लिखा जाता था। इस प्रकार, सीमित साधनों से ही हिंदी की पढ़ाई बैठकाओं में होती थी। (यह ऐतिहासिक तथ्य पूजानंद नेमा के साथ साक्षात्कार के समय प्राप्त हुआ- अगस्त 2013)। तीन बजे बैठका खुल जाती थी और शाम के छ: बजे तक हिंदी की पढ़ाई होती थी। यह बात ध्यातव्य है कि छात्रगण जब बैठका जाते थे तो वहाँ पहुँचते ही बैठका को साफ़ करते थे– झाड़ू-पोंछा लगाना, खिड़कियों को साफ़ करना, पुस्तकों से धूल निकालना ये सब विद्यार्थियों के उत्तरदायित्व थे। ऐसा करने से वे और ज्यादा जिम्मेदार व संस्कारहित बन जाते थे।

यह एक अकाट्य सत्य है कि मॉरीशस में जब बैठकाओं में हिंदी की पढ़ाई होती थी तो हिंदू धर्म के धरातल पर होता था। मॉरीशस में हमारे भारतीय वंश रामचरितमानस के माध्यम से हिंदी पढ़ते थे। बैठका का हिंदी शिक्षण हम धर्म से पृथक नहीं कर सकते हैं। कारण यह है कि पाटी पूजा बैठकाओं की एक महत्त्वपूर्ण और विशेष गतिविधि थी। यदि बैठका की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखें तो यह पता चलता है, कि हर गाँव की बैठकाओं में, प्रति गुरुवार को पाटी पूजा होती थी। गुरुओं को सम्मानित करना, संझा प्रार्थना उच्चरित करना और रामायण बाँचना – बैठका की एक लोक सँस्कृति बन चुकी थी। हिंदी की पढ़ाई का श्रीगणेश एक विशेष प्रार्थना से होता था जो इस प्रकार से उल्लेखनीय है:

सर सर, सर सर संझा कली, सोने रूप गिरवर धरी, जो जाने गिरवर के भेवे, नित्य उठे पूजे गणपथ देवा, गणपथ पूजे का करिजे, पहले फूल विनायक दीजे, दूसर को सरोसती दीजे, तिसर का महादेव, चौथे गुरु पाँव पावे आसीष, गुरु चतिया जीय लाख बरीस गुरु द्वारे बरसे चांदी अकल्मंदी, विद्या के फल बैठल खाया

इस प्रकार से बैठका में छात्र व गुरु का परस्पर सम्बंध काफी सुदृढ़ व घनिष्ठ था। बैठका में छात्रों से रामचरितमानस गायन का अभ्यास करवाते थे तथा दोहों और चौपाइयों की व्याख्या करवाते थे। इस दृष्टि से छात्रगण हिंदी सीखने में सक्षम रहते थे। "राम गति देहु सुमति" यह मॉरीशस की बैठकाओं का मूल मंत्र था जिसका तात्पर्य यह है कि राम मार्ग हमें ज्ञान की ओर ले जाएगा। अत: इस बात की पुष्टि होती है कि रामचरितमानस गायन हिंदी सीखने की एक सटीक एवं सशक्त शिक्षण विधि थी।

यदि बैठकाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अन्वेषण करे, तो उसकी विकास यात्रा में विभिन्न हिंदी योद्धाओं ने अपना नि:स्वार्थ योगदान दिया। कह सकते हैं कि लोगों ने बैठका के माध्यम से हिंदी का आंदोलन छेड़ा। इस आंदोलन में कई नामों का उल्लेख करना उचित होगा।

13 अक्तूबर 1907 को मणिलाल डाक्टर का मॉरीशस में आगमन हुआ। मॉरीशस में उनके पदार्पण से मानो भारतीयों को एक सच्चा संरक्षक मिल गया हो। मणिलाल जी ने हरेक गाँव की बैठकाओं में हिंदी में ओजस्वी भाषण दिए, क्योंकि हिंदी वहाँ के लोगों की भाषा थी। 1908 में ही मणिलालजी के नेतृत्व में 'यंगमैन हिन्दू एसोसियेशन' की स्थापना की। 1910 में पोर लुई में आर्य समाज की पुनर्स्थापना हुई और यह एक महत्वपूर्ण कड़ी थी जहाँ पर भारतीय मॉरीशनों का एक सुधारवादी आन्दोलन था। उस समय 'बैठका' की एक विशेष भूमिका थी, क्योंकि उसी समय मणिलाल डाक्टर बैठकाओं में जाकर भारतीयों में जागरूकता का पाठ सिखाते थे। सन 15 मार्च 1909 को 'हिन्दुस्तानी' पत्र का प्रकाशन मणिलाल डाक्टर के सौजन्य से हुआ। यह बात उल्लेखनीय है कि बैठकाओं में ही 'हिंदुस्तानी' पत्र का वितरण होता था। हिंदुस्तानी पत्र में विभिन्न विषयों पर हिंदी के लेख लिखे जाते थे। इसके अतिरिक्त सन 1924 में जब सर कुँवर महाराज सिंह भारतीय आप्रवासियों की स्थिति को जाँचने के लिए आए थे, तो उन्होंने भारतीय भाषाओं के शिक्षण का समर्थन करते हुए उनकी अनुशंसा की।

परिणामत: बैठकाओं में हिंदी भाषा का शिक्षण सुचारू रूप से होने लगा और हिन्दू समाज के लिए बैठका एक महत्वपूर्ण भवन बन गया। सन 1948-1950 में अखिल मॉरीशस में प्राय: 400 से अधिक बैठकाएँ थीं। 'बैठकाओं' में हिंदी का पठन-पाठन उस समय सक्रिय रूप से हो रहा था, सन 1950 बैठका का विकास काल था।

तदंतर डॉ. भारद्वाज अपनी पत्नी सहित मॉरीशस आ पहुँचे और मणिलाल डाक्टर एवं महात्मा गाँधी की कार्य- प्रणालियों का अनुसरण किया। जन सेवा, लोक कल्याण एवं लोकोदय के कार्यों में अपने आप को समर्पित करना- भारद्वाज का वैशिष्ट्य था। अत: सायंकाल के समय वे बस्तियों में चले जाते थे और वहाँ की बैठकाओं में हिंदी तथा स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के बारे में पढ़ाते थे। उनकी पत्नी सुमंगली देवी दोनों सायंकाल अथवा रात्रि के समय उस आर्य समाज की बैठका में हिंदी पढ़ाते थे और जितने सारे छात्र गण हिंदी पढ़ते थे; वे देश के सशक्त हिंदी भक्त, हिंदी योद्धा और पक्का हिंदू बन जाते थे। लखन दूबारी इसका एक ज्वलंत उदाहरण है। पंडित आत्माराम विश्वनाथ जो मॉरीशस के भारतीय वंश के लोगों के लिए देव दूत बनकर, सन 1912 में मॉरीशस आए थे। वे आर्य समाज की बैठकाओं के लिए वरदान थे। इसके अतिरिक्त 1954 के अधिवेशन की रिपोर्ट से पता चलता है कि पंडित आत्माराम आर्य सभा का उप प्रधान पद के रूप में आसीन था। इस पदवी का भरपूर लाभ उठाते हुए उन्होंने आर्य सभा की शाखाओं का दौरा किया और उन बैठकाओं में जाकर प्रेरणास्रोत बनकर हिंदुओं को हिंदी पढ़ने की विनम्र मांग की। यह उल्लेख्य है कि बैठकाओं में वार्षिक उत्सव एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी जहाँ पर विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार दिया जाता था। इस प्रकार से उन छात्रों को हिंदी पढ़ने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता था।

इसके अतिरिक्त पंडित काशीनाथ किष्टो ने बैठका आंदोलन और मॉरीशस में हिंदी भाषा के उन्नयन में अथक संघर्ष किया। उन्होंने गाँव गाँव और शहर में जाकर 'बैठकाएँ' खोलना शुरु किया। पंडित काशीनाथ किष्टो की पुत्री का नाम मोक्षदा था जो इस देश के भारतवंशियों की प्रथम लोरिएट बनी। यह ध्यातव्य है कि पुत्री मोक्षदा 'बैठका' की ही उपज थी। पंडित काशीनाथ किष्टो के अथक प्रयास व संघर्ष से आर्य परोपकारिणी सभा ने इन्हीं की देख रेख में 01 अगस्त 1918 को वाकुआ में दस छात्रों के साथ आर्यन वैदिक स्कूल की नींव रखी– यही बैठका का विकसित रूप था; क्योंकि हिंदी भाषा के अतिरिक्त यूरोपीय भाषाओं का भी पठन- पाठन होता था। पंडित जी अपनी पत्नी सहित इसी स्कूल में अध्यापन का कार्य कर हिंदी के सेवक बने।

पंडित जगनन्दन नन्दलाल का बैठकाओं के विकास तथा हिंदी आन्दोलन में विशेष योगदान रहा है। पंडित जगनंदनलाल के घर के पीछे एक नदी थी जिसके तट पर उन्होंने एक घास–फूस की एक छोटी सी 'बैठका' बनवाई थी। पंडित जगनंदनलाल की पत्नी गाय और बकरी का पालन करती थी। अत: इनके घर में दूध की कमी नहीं होती थी। बैठका में आए बच्चों को भी दूध दिया जाता था। पंडित जी हिंदी भाषा के सशक्त हिमायती थे। वे हमेशा हिंदी में ही बात करते थे।

बैठका आंदोलन में मोहनलाल मोहित का नाम लेना समीचीन है। उनके नेतृत्व में लावेनिर की बैठका में प्रति रविवार को हिंदी की पढ़ाई नियमित रूप से होती थी। तभी से उन्होंने बालकों को विधिवत पढ़ाना शुरु किया और इस कार्य से उन्होंने 'बैठका' का नियम 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' की सार्थकता प्रदान की।

उधर 1926 में तिलक विद्यालय क्रेव कॅयर गाँव में स्थापित हुआ, उसी को सरस्वती कन्या पाठशाला भी कहा गया था। यह पाठशाला विशेष रूप से कन्याओं के लिए खोली गई थी। यह एक अकाट्य सत्य है कि उस समय इस कन्या पाठशाला में सप्ताह भर दिन के दौरान हिंदी की पढ़ाई होती थी, जिसमें सुरुज प्रसाद मंगर भगत हिंदी अध्यापक थे। तिलक विद्यालय का स्थानांतरण धारा नगरी (मोंताईं लोंग- मॉरीशस के उत्तर प्रांत का एक गाँव) में हुआ और उसका नाम हिंदी प्रचारिणी सभा नाम से 1935 में पंजीकृत हुआ। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना का उद्देश्य था – मॉरीशस की सभी बैठकाओं को संचालित करना, बैठकाओं की वार्षिक परीक्षाएँ, पाठ्य पुस्तकें, प्रमाणपत्र वितरण आदि कार्यों को संभालना आदि हैं।

इसके उपरांत, हिंदी प्रचारिणी सभा की एतिहासिक पृष्ठभूमि में श्री जयनारायण राय जी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। हिंदी प्रचारिणी सभा में राय जी की भूमिका व योगदान प्रशंसनीय रहा है। श्री जयनारायण राय के नेतृत्व में सभा का कार्य होने लगा। उनके व्यक्तिगत सम्पर्क से ही इलाहाबाद के हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं की व्यवस्था हमारे देश में हुई। इस तरह मॉरीशस की बैठकाओं में हिंदी शिक्षण व परीक्षाएँ बहुत ही सक्रिय रूप से संचालित होने लगी। 1946 में परिचय की परीक्षा पहली बार हुई। कुछ वर्षों के बाद 1956 में प्रथमा, 1963 में उत्तमा की परीक्षा होने लगीं। इन परीक्षाओं के आयोजन एवं संचालन में श्री जय नारायण राय का अभूतपूर्व योगदान रहा। यह उल्लेखनीय बात है कि हिंदी प्रचारिणी द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम वा पाठ्य पुस्तकें छात्रों के लिए काफी लाभकारी थे। छात्रों को हिंदी भाषा के साथ साथ हिंदी साहित्य भी पढना पड़ता था जिससे वे परीक्षाओं में सफल हो सके। अत: हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा संचालित परीक्षाएँ हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में इसलिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ क्योंकि देश की सभी बैठकाओं में होती थी।

बैठका के निर्माण और विकास में विष्णुदयाल का योगदान उल्लेखनीय है। यह बात ध्यातव्य है कि जब वासुदेव जी 1939 में, भारत से मॉरीशस लौटे तो उनका हिंदी एवं 'बैठका' आन्दोलन का श्री गणेश हो चुका था। अपने भाइयों के साथ उन लोगों ने 'बैठका' को लेकर जो संघर्ष किया वह अपने आप में बड़ी बात है। उदाहरणार्थ उनके यहाँ रात्रिकाल में बैठकाएँ होती थीं जिसमें भारी मात्रा में बच्चे पढ़ने आते थे। जो वयस्क थे, वे पुरोहित बनने के उद्देश्य से हिंदी सीखने आते थे। इनकी बैठका में हिंदी सिखाते समय उन बच्चों में हिन्दुत्व समझाने का सिरतोड़ परिश्रम किया जाता था। वासुदेव विष्णुदयाल एक सृजनात्मक लेखक होने के साथ साथ वे एक ओजस्वी वक्ता भी थे। उन्होंने बैठका आन्दोलन में जान फूँकने के लिए पाठ्य पुस्तकें भी लिखीं और उनके निर्देशन, सलाह व प्रेरणा से और बैठकाएँ खोली गईं। गाँव गाँव में जाकर वासुदेव ने हिन्दू जाति को 'बैठका' खोलने के लिए अभिप्रेरित किया। उनके देशव्यापी दौरों ने हिंदू समाज में जागृति की लौ दिखाई दी। इस प्रकार बैठका के उत्थान में विष्णुदयाल का योगदान अप्रतिम रहा है। अत: इस प्रकार से बैठका का काल निर्धारण किया जा सकता है : उद्भव काल – 1834–1898, उदय काल-1898-1926, विकास काल – 1926–1950, पुनरुत्थान काल – 1950– आज तक।

यदि समकालीन संदर्भ में बैठका की स्थिति देखें तो यह दृष्टिगोचर होता है कि प्राथमिक पाठशालाओं व माध्यमिक स्कूलों ने बैठकाओं की जगह ले ली है। आजकल मॉरीशस में ऐसी बहुत सारे आधुनिकतम एवं सुंदरतम शैक्षणिक संस्थाएँ हैं जहाँ पर हिंदी भाषा का पठन-पाठन हो रहा है। नए शैक्षणिक भवनों में एक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण छाया हुआ है जिसमें औपचारिक शिक्षा पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। आज भी सम्पूर्ण मॉरीशस में बैठकाएँ अभी तक संचालित होती हैं।

समग्रत: हिंदी भाषा यदि आज मॉरीशस में पुष्पित, पल्लवित एवं फलित है तो इसका बहुत बड़ा श्रेय उन बैठकाओं को जाता है जो हमारे भारतीय आप्रवासियों की देन है।

मॉरीशस में हिंदी की आदि संस्था

हिंदी प्रचारिणी सभा

यंतुदेव बुधु

मॉरीशस में हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन को लेकर हिंदी प्रचारिणी सभा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1926 में तिलक विद्यालय नाम से हुई थी। 1935 में इसका पंजीयन हुआ। तब से लेकर आज तक यह संस्था हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यरत है। सभा का आदर्श वाक्य है : 'भाषा गई तो संस्कृति गई'। इसी उद्देश्य को लेकर सभा भाषा के उन्नयन के लिए कार्य करती आ रही है। कई कार्यकारिणी समितियाँ आईं और गईं पर सभा का एक ही उद्देश्य रहा और वह है हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार। 2004 में मॉरीशस की विधान सभा में पारित एक विधेयक अनुसार हिंदी प्रचारिणी सभा अब एक औपचारिक संस्था है। मॉरीशस सरकार, सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं को मान्यता देती है और उत्तमा-साहित्य रत्न परीक्षा को डिप्लोमा इन हिंदी का दर्जा प्राप्त है।

हिंदी प्रचारिणी सभा एक स्वैच्छिक एवं शैक्षणिक संस्था है जो आज तक अपने पैरों पर खड़ी है। यह इसलिए सम्भव हो पा रहा है क्योंकि मॉरीशस में ऐसे दाता हुए हैं जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार के लिए अपने पैसे, अपनी ज़मीन तथा अपने गन्ने के खेत भी सभा के नाम कर दिए। उनमें से मैं एक महान आत्मा का नाम लेना चाहूँगा जिन्होंने हिंदी भाषा की सेवा के लिए अपना सर्वस्व सभा को दान में देकर खुद तीर्थ यात्रा के लिए भारत चले गए और कभी लौटे ही नहीं। वे हैं स्वर्गीय रामदास रामलखन जिन्हें लोग गिरधारी भगत के नाम से जानते थे। उनकी प्रतिमा सभा-भवन के सामने स्थित है। आज मॉरीशस में हिंदी भाषा फूल-फल रही है, यह जानकर उनकी आत्मा को ज़रूर शान्ति मिल रही होगी और वे हमें आशीष दे रहे होंगे। हिंदी प्रचारिणी सभा में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की कक्षाओं तक का अध्यापन कराया जाता है। भाषा प्रचार के लिए अनेक स्तरों पर प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है। आज सभा से लगभग 190 सायंकालीन तथा सप्ताहांत पाठशालाएँ पंजीकृत है। प्राथमिक स्तर के लिए (कक्षा एक से कक्षा 6 तक) सभा अपने खर्चे पर निरीक्षण, परीक्षण, प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार वितरण करती है। इन संस्थाओं में पठन-पाठन हेतु हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से कक्षा एक से कक्षा छह तक के लिए पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। छठवीं कक्षा की परीक्षा राष्ट्रीय स्तर पर की जाती है और प्रथम दस में स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

60 साल से अधिक हो चुके हैं जब से हिंदी प्रचारिणी सभा माध्यमिक स्तर पर परिचय से उत्तमा-साहित्य रत्न तक की परीक्षाएँ भारत के इलाहाबाद शहर के हिंदी साहित्य सम्मेलन से करवाती आ रही है। हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा परिचय परीक्षा का आयोजन 1946 से शुरू हुआ। कालान्तर में यह देखा गया कि छठवीं और परिचय कक्षा के बीच एक खाई है जिसकी पूर्ति के लिए हिंदी प्रचारिणी सभा ने प्रवेशिका परीक्षा का आयोजन वर्ष 1964 से आरंभ किया। आज इस कक्षा की पढ़ाई के लिए स्थानीय साहित्यकारों की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में रखा गया है। इसके पीछे हमारा उद्देश्य है – एक तो छात्र को स्थानीय साहित्यकारों से परिचित कराना और दूसरा यह कि स्थानीय साहित्यकारों को साहित्य सृजन में बढ़ावा देना। प्रवेशिका परीक्षा में लगभग 900 से 1000 तक छात्र भाग लेते हैं।

स्वर्गीय श्री जयनारायण रॉय के सहयोग से हिंदी साहित्य सम्मेलन-इलाहाबाद से पहली बार 1946 में परिचय परीक्षा का आयोजन हुआ। 1956 में प्रथमा, 1963 में प्रथमा और 1965 में उत्तमा-साहित्य रत्न परीक्षाओं का आयोजन हुआ। सभा द्वारा आज भी ये परीक्षाएँ आयोजित होती हैं और लगभग 2000 छात्र हर वर्ष इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं। छात्रों के प्रोत्साहन के लिए सभा की ओर से प्रथम दस में स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया जाता है तथा प्रथम स्थान पर आनेवाले को नकद राशि भी दी जाती है। वर्ष 2017 से उत्तमा-साहित्य रत्न में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र को स्नातक स्तर की पढ़ाई के छात्रवृत्ति दी जा रही है। पढ़ाई का पूरा खर्च सभा वहन कर रही है।

आज पूरी दुनिया में मानव मूल्य की शिक्षा स्कूल के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का विचार दिया जा रहा है। हमारी संस्था द्वारा संचालित सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम में मानव मूल्य की शिक्षा सन्निहित है। सूर, तुलसी, कबीर, प्रेमचन्द, गुप्त, प्रसाद, महादेवी जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गई हैं। इनकी रचनाओं में मानव मूल्य की शिक्षा भरी पड़ी है, जिन्हें पढ़कर छात्र आदर्श व्यक्ति व अच्छा नागरिक बन सकते हैं। सूर के बाल-वर्णन से माता यशोदा की ममता के प्रेम की गहराई का पता चलता है। बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित निबन्ध 'ज़बान' से छात्रों को यह सीख मिल सकती है कि गलत भाषा बोलने का नतीजा क्या हो सकता है।

हिंदी भाषा में रुचि बढ़ाने के लिए छात्रों को प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वर्षभर में हर स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए श्रुतिलेखन प्रतियोगिता, माध्यमिक के लिए कविता-वाचन तथा सबके लिए निबंध-लेखन प्रतियोगिता का वार्षिक आयोजन होता है। इन प्रतियोगिताओं में पूरे मॉरीशस के छात्र भाग लेते हैं। श्रुतिलेख प्रतियोगिता और कविता-वाचन प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्रीय स्तर पर होता है ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा छात्रों को भाग लेने का अवसर मिले।

हिंदी प्रचारिणी सभा उत्तम-साहित्य रत्न के छात्रों के लिए हर वर्ष कार्यशाला का आयोजन करती है जिसमें छात्रों को पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र तथा परीक्षा से संबंधित विषय पर प्रकाश डाला जाता है। ऐसी कार्यशाला आयोजित करने के पीछे सभा का उद्देश्य छात्रों को परीक्षा की तैयारी में सहयोग देना तथा उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना। 6-7 वर्षों तक सभा द्वारा अध्यापन के पश्चात उनका अंतिम साक्षात्कार लिया जाता है, जहाँ विचारों का आदान-प्रदान होता है तथा छात्रों को हिंदी विषय को लेकर भविष्य में क्या कर सकते हैं, इस पर भी विचार-विनिमय होता है।

आज कंप्यूटर का युग है और इससे अनभिज्ञ रहना अपने आप को अनपढ़ बनाना है। कहा जाता है कि हमें समय की माँग को देखना चाहिए और समय के साथ चलना चाहिए। हिंदी प्रचारिणी सभा की 2013 से अपनी एक वेब साईट है। इससे छात्र संपर्क में रहते हैं तथा वेब साईट पर उपलब्ध जानकारियों से अवगत होते हैं। पढ़ाई से संबंधित जानकारियाँ – पाठ्यक्रम, सभी परीक्षाओं के पुराने प्रश्नपत्र, सभा से संबंधित सूचनाएँ आदि वेब साईट पर उपलब्ध हैं इससे छात्र लाभांवित होते हैं। 2013 से ही सभा में एक कंप्यूटर कक्ष का निर्माण किया गया है जहाँ पर छात्र हिंदी-टंकण सीखते हैं। सभा का उद्देश्य है कि छात्र जब यहाँ से अपनी पढ़ाई पूरी करके निकलें तो उन्हें हिंदी-टंकण की भी जानकारी हो तथा वे हिंदी भाषा में टंकण कर सकें।

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए साहित्य-सृजन की एक अहम भूमिका रही। सभा द्वारा 'पंकज' नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित होती है जिसमें कई नए और पुराने साहित्यकारों की रचनाएँ छपती हैं। पत्रिका में हर विधा की रचनाएँ होती हैं। एक तरह से नए लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं। इससे छात्रों को विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। सभा हर वर्ष कवि-सम्मेलन का भी आयोजन करती है। इस आयोजन से नए कवियों को उभरने का अवसर प्राप्त होता है तथा साहित्य-सृजन की ओर बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलती है।

हर वर्ष हिंदी प्रचारिणी सभा जब अपना स्थापना-दिवस मनाती है उस अवसर पर छात्रों का एक कार्यक्रम होता है जिसमें हिंदी भवन-विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र किसी विशेष साहित्यकार पर तैयारी करते हैं। उस अवसर पर आमंत्रित मुख्य वक्ता के सामने वे अपनी प्रस्तुति देते हैं। इस तरह उन्हें मौखिक रूप से उभरने का भी मौका मिलता है। इससे छात्र बहुत सीखते हैं और लाभांवित भी होते हैं।

हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रों के अलावा, शिक्षकों के लिए भी कार्यशाला का आयोजन करती है। हमारा मानना है कि छात्रों को सिखाने से पहले सीखना ज़रूर होता है इसलिए कार्यशाला के दौरान शिक्षकों को प्रशिक्षित करना भी महत्वपूर्ण होता है। इस तरह की कार्यशाला में शिक्षण की विधि, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक तथा प्रश्नपत्र पर भी विचार-विमर्श होता है।

हिंदी प्रचारिणी सभा-भवन में हिंदी-सेवक श्री नेम नारायण गुप्त के नाम से एक भव्य पुस्तकालय भी है जहाँ कई हजार पुस्तकें हैं। यहाँ आलोचनात्मक पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। महत्वपूर्ण यह है कि मॉरीशस में जितने हिंदी के विद्वान, विश्वविद्यालय साहित्यकार तथा हिंदी शिक्षक हुए हैं, उनका किसी न किसी रूप में हिंदी प्रचारिणी सभा से संबंध अवश्य रहा है।

अभिमन्यु अनत की काव्य-यात्रा

कमल किशोर गोयनका

मॉरीशस के विश्व प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार अभिमन्यु अनत 4 जून, 2018 को इस नश्वर संसार को छोड़कर देवलोक में चले गए। मैं उस समय अमेरिका में था और उनके पुत्र रत्नेश अनत ने यह दुःखद समाचार दिया तो मैं हतप्रभ रह गया। अनत अस्वस्थ थे परंतु उनके चले जाने की संभावना नहीं थी। उन्हें 16 मई, 2018 को मॉरीशस का राष्ट्रीय अवार्ड मिला था और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की अध्यक्षता में हमारी समिति ने विश्व हिंदी सम्मेलन (18-20 अगस्त, 2018) में उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया था, परंतु ईश्वर की कुछ और ही इच्छा थी। अभिमन्यु अनत का जन्म मॉरीशस टापू में हुआ जो 'मारीच द्वीप', 'मिरिच टापू' तथा 'हिंद महासागर का मोती' एवं 'छोटा भारत' आदि नामों से भी जाना जाता है। इस द्वीप में सन् 1505 में पोर्तुगीज, सन् 1598 में डच, सन् 1915 में फ्रांसीसी आए और सन् 1814 में इस पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। इस समय तक भारतीय व्यापारी तथा कैदी मॉरीशस में आ चुके थे और वे बराबर अमानवीय व्यवहार के शिकार बने। मॉरीशस में भारत से शर्तबंदी कानून के अंतर्गत सितंबर, 1834 से भारतीय मजदूरों का आना शुरू हुआ और 36 पुरुष श्रमिकों का पहला दस्ता पहुंचा। इसके उपरांत भारत से लाखों मजदूर छल और कपट से मॉरीशस भेजे गए और उन्हें पत्थर के नीचे सोना मिलने का लालच दिया गया, परंतु उन्हें नारकीय जीवन एवं यातनाओं का कभी खत्म न होने वाला संसार मिला। कुछ समय के बाद अमानवीय जीवन से मुक्ति के प्रयास भी शुरू हुए। जर्मनी के आदोल्फ-द-प्लेवित्ज ने भारतीय प्रवासियों के विरुद्ध बने कानूनों का विरोध किया। महात्मा गांधी सन् 1901 में मॉरीशस आए और उन्होंने भारतीयों को अपने बच्चों को शिक्षा देने तथा राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद मारीलाल डॉक्टर, कुंवर महाराज सिंह, आर्य समाज, सनातन धर्म समाज, वासुदेव विष्णुदयाल, पं. रामनारायण, शिवसागर रामगुलाम आदि ने सांस्कृतिक-राजनीतिक जागरण किया और मॉरीशस में लोकतंत्र की स्थापना हुई।

मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उसे अंतरराष्ट्रीय रंगमंच तक ले जाने का एक लंबा संघर्ष तथा बलिदानपूर्ण इतिहास है। मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन से पूर्व कई हजार भारतीय सिपाही तथा कैदी मॉरीशस की भूमि पर आ चुके थे और तब वहां हिंदी का प्रयोग होता था, किंतु फ्रेंच, अंग्रेजी तथा क्रियोली बोली पूरे देश में अपना महत्व स्थापित कर चुकी थी। भारत से जब छल-कपट से मजदूरों का आगमन हुआ तो वे प्रमुख रूप से बिहार प्रांत से आए और अपने साथ भोजपुरी तथा हिंदी को भी साथ लेकर आए। ये भारतीय मजदूर अपने साथ रामायण, महाभारत, हनुमान चालीसा, आल्हा जैसी पुस्तकें भी लाए। इन भारतीयों ने अपने जहाजी भाइयों के साथ भोजपुरी-हिंदी बोलते हुए समुद्र की विकट लंबी यात्रा पूरी की थी और मजदूरी तथा दासत्व काल में खेतों, कारखानों, कोठियों, जेलों, बस्तियों एवं झोपड़ियों में अपने सुख-दुःख में, अपने काम-काज और पर्व-त्यौहार के समय भोजपुरी तथा हिंदी का ही प्रयोग किया था। अभिमन्यु अनत ने 6 दिसंबर, 1994 को के.के. बिड़ला फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित व्याख्यान में कहा था कि इन भारतीय मजदूरों पर जब गोरे मालिकों के कोड़े और बांसों के प्रहार होते थे तो इनकी आहें भी भोजपुरी और हिंदी में ही निकलती थीं। ये भारतीय यातना-शिविरों जैसी बस्तियों में रहते हुए जब रात को चांदनी में अपनी-अपनी राम कहानी कहते तो हिंदी और भोजपुरी में ही कहते, चाहे वे भारत के किसी भी प्रांत से आए हों। हिंदी तथा भोजपुरी एक-दूसरे से जुड़ने, एक-दूसरे का दुःख-दर्द बांटने, धर्म-ग्रंथों की कथाएं सुनाने तथा अपने धर्म की संस्कृति से जुड़े रहने की भाषा थी।

मॉरीशस के आरंभिक काल में सरकारी धरातल पर हिंदी के पठन-पाठन के लिए कोई प्रयास नहीं हुआ, लेकिन सन् 1871 में आदोल्फ-द-प्लेवित्ज ने भारतीय मजदूरों की ओर से एक याचिका तैयार की जो अंग्रेजी के साथ तमिल एवं हिंदुस्तानी में भी तैयार कराई गई थी। यह पहला अवसर था जब 'हिंदुस्तानी' भाषा में हिंदुस्तानियों की वकालत की गई थी। सन् 1859 से मॉरीशस में हिंदू मंदिरों का निर्माण शुरू हो गया था और उनमें भजन-कीर्तन के साथ हिंदी की भी पढ़ाई होती थी। इसी प्रकार बैठका रात्रि में लगती थी और भारतीय मजदूर इनमें अपने सुख-दुःख बांटते और अपनी संस्कृति, भाषा तथा धर्म को बचाने के प्रयत्न करते। उस काल के भोजपुरी लोक-गीतों में भी इन मजदूरों की व्यथा कहानी व्यक्त हुई है। गांधीजी ने 29 अक्टूबर, 1901 को मॉरीशस आगमन पर अपने व्याख्यान खड़ी बोली-हिंदी में दिए तो गोरों की दृष्टि में इस 'जंगली भाषा' को गौरव मिला और साहस एवं स्वाभिमान भी तथा भोजपुरी को खड़ी बोली-हिंदी की ओर मुड़ने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। गांधीजी की प्रेरणा से वर्मा से मणिलाल मगनलाल डॉक्टर 11 अक्टूबर, 1907 को मॉरीशस पहुंचे और अपने भाषणों में उन्होंने हिंदी का प्रयोग किया तथा 'हिंदुस्तानी' (1909) पत्र का प्रकाशन किया। सन् 1910 में मॉरीशस में आर्य समाज की स्थापना हुई। आर्य समाज ने हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा शिक्षण में ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया। इसके उपरांत स्वामी मंगलानंद पुरी, डॉ. चिरंजीव भारद्वाज तथा उनकी पत्नी सुमंगला देवी, पं. आत्माराम विश्वनाथ, स्वामी स्वतंत्रातानंद, पं. काशीनाथ किश्तो, पं. रामअवध शर्मा, कुंवर महाराज सिंह, मेहता जैमिनी, स्वामी विज्ञानानंद, वेनीमाधो सुतीराम, श्री नृसिंह दास आदि अनेक व्यक्तियों ने हिंदी के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। आर्य समाज के साथ सनातन धर्म के प्रचारकों, आर्य परोपकारिणी सभा (1925) आदि ने भी हिंदी की धारा को विकसित किया। सन् 1935 तक 'हिंदुस्तानी' (1909), 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' (1911), 'आर्यवीर' (1929), 'ओरियंटल गजट' (1912), 'मॉरीशस मित्र' (1924), 'सनातन धर्मार्थ' (1933) आदि में हिंदी कविता-कहानियों के प्रकाशित होने से हिंदी भाषा और साहित्य का उद्भव हुआ और उसने विकास की ओर कदम बढ़ाए।

मॉरीशस में सन् 1935 से 1968 तक हिंदी भाषा और साहित्य ने कई करवटें लीं, नए समर्पित व्यक्ति और संस्थाएं तथा साहित्यकार सामने आए और उन्होंने पूरी निष्ठा से हिंदी का विकास किया। व्यक्तियों में पं. उमाशंकर गिरजानन, पं. श्रीनिवास जगदत्त, नेमनारायण 'गुरुजी', जयनारायण राय, मोहनलाल मोहित, भगत-बंधु, डॉ. शिवसागर रामगुलाम, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, सोमदत्त बखोरी, प्रो. रामप्रकाश आदि अनेक हिंदी प्रेमियों का उल्लेख किया जा सकता है जिन्होंने इस क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया। प्रो. रामप्रकाश को भारत सरकार ने भेजा था। वे मॉरीशस में 30 वर्ष रहे और हिंदी भाषा के विकास तथा हिंदी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में विशेष महत्व का कार्य किया। संस्थाओं में, हिंदी प्रचारिणी सभा (1935) तथा आर्य समाज की 'आर्य प्रतिनिधि सभा' ने हिंदी की उन्नति के लिए विभिन्न कार्य किए और उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। इस काल में रेडियो तथा दूरदर्शन का भी श्रीगणेश हुआ और हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हुआ। इसी समय हिंदी के प्रसिद्ध लेखक यशपाल जैन, रामधारी सिंह 'दिनकर' डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि मॉरीशस गए और मॉरीशस के अनेक हिंदी हिंदी लेखक प्रेरित और प्रभावित हुए। इस काल के अंतिम दशक में अभिमन्यु अनत जैसे लेखकों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने मॉरीशस के हिंदी साहित्य को अपनी 30-35 वर्ष की साहित्य-साधना से नई संवेदना, नया शिल्प-कौशल, नई विचार-दृष्टि के साथ नई ऊंचाइयों पर स्थापित करके उसकी विशिष्ट पहचान ही नहीं बनाया बल्कि उसे हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बनाकर हिंदी के अंतरराष्ट्रीय मंच पर सदा-सदा के लिए स्थापित कर दिया।

मॉरीशस की हिंदी काव्य-यात्रा के बीच अभिमन्यु अनत के काव्य-संसार का परीक्षण एवं विश्लेषण तथा उसका मूल्यांकन करना तर्कसंगत होगा। अभिमन्यु अनत मॉरीशस के एक ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने न केवल अपने देश के हिंदी साहित्य को ऊंचाइयों तक पहुंचाया है बल्कि विश्व में उसकी विशिष्ट पहचान बनाते हुए उसे सम्मानपूर्वक स्थान भी दिलवाया है। अभिमन्यु अनत बहुआयामी तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। अनत कवि होने के साथ उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, जीवनीकार, संस्मरणकार, लघुकथाकार, बाल कथाकार, व्यंग्यकार, भेंटवार्ताकार, संपादक, निर्देशक, चित्रकार, छायाकार आदि विभिन्न सर्जनात्मक रूपों में हमारे सामने आते हैं और अपनी प्रतिभा का परिचय देते हैं। कवि के रूप में अनत में कथाकार जैसा विस्तार नहीं है लेकिन उनके संपूर्ण लेखकीय व्यक्तित्व में उनके काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'नागफनी में उलझी सांसें (1977), 'कैक्टस के दांत' (1982), 'एक डायरी बयान' (1985), 'गुलमोहर खोल उठा' (1994) तथा 'लरजते लम्हे' अप्रकाशित है, किंतु इस अप्रकाशित कविता संग्रह की संपूर्ण कविताएं यहां संकलित हैं। इन पांचों कविता-संग्रहों में अनत की 475 कविताएं हैं तथा अन्य 43 कविताएं ऐसी भी हैं जो पत्र-पत्रिकाओं में छपी हैं और कविता-संग्रहों में आने से रह गई हैं। मुझे इसका दुःख है कि बंबई से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' के फरवरी-अप्रैल, 1970 के अंकों में अभिमन्यु की प्रसिद्ध धारावाहिक कविता 'पसीना किसी का, फसल किसी की' (छः अंकों में छपी थी जिसे यहां नहीं दे पा रहे हैं, क्योंकि कवि की फाइलों में यह उपलब्ध नहीं थी और दिल्ली में रहते हुए 'नवभारत टाइम्स' के बम्बई संस्करण को प्राप्त करना असंभव था) इस कविता के विषय में मेरे एक प्रश्न के उत्तर में अभिमन्यु अनत ने कहा था, 'मेरी पहली कविता का शीर्षक था- 'पसीना किसी का, फसल किसी की'। यह अपने में कई कविताओं को लिए हुए एक कविता थी। उस समय 'नवभारत टाइम्स' के संपादक महावीर अधिकारी मॉरीशस आए हुए थे। उन्हें कविता पसंद आई थी और उन्होंने इस कविता को अपने अखबार में धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया था। जहां तक उसकी वस्तु की बात है उसमें मजदूर, जो कि मैं रह चुका था, और मालिक के बीच की दरार पर मैंने सवाल उठाए थे। पहली कविता होने के कारण आक्रोश में भावुकता कुछ अधिक ही थी शायद।'' एक अन्य प्रश्न के उत्तर में अनत ने कहा था कि उनका प्रथम कविता संग्रह अभी तक अप्रकाशित है। इसमें ही उनकी यह प्रथम कविता भी सम्मिलित है, परंतु उनसे इसके अप्रकाशित रहने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका।

अभिमन्यु अनत के कवि रूप को समझने के लिए उनकी काव्य सृजन-प्रक्रिया तथा कविता के संबंध में उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण भी आवश्यक है। कवि की सृजन-प्रक्रिया का अध्ययन अनेक वर्षों से महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि इससे काव्य-रचना की संश्लिष्ट-प्रक्रिया तथा उसके अज्ञात रहस्यों को थोड़ा बहुत समझा जा सकता है। अभिमन्यु अनत से जब मैंने उनकी सृजन-प्रक्रिया के बारे में पूछा तो उनका उत्तर था, 'मेरे अपने सामने स्थितियां होती हैं और कभी वह एक अकेला आदमी होता है जिसकी खामोश यातनाओं को मैं देखता-महसूसता रहता हूं। फिर उस स्थिति-परिस्थिति- और आदमी के इर्द-गिर्द मेरी पूरी मानसिक प्रक्रिया परिक्रमा करती रहती है। पहले प्रश्न-ही-प्रश्न पैदा होते हैं। यह स्थिति क्यों है? इस स्थिति में फंसा हुआ यह आदमी कौन है? ये स्थितियां उसके सामने किसने पैदा कीं? क्यों कीं? और फिर धीरे-धीरे उस स्थिति को मैं अपने में समेटकर उस प्रतिक्रिया को अनुभव करता हूं।'' कविता के लघुरूप 'क्षणिका' जैसे काव्य-रूप को अपनाने पर मेरे एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा 'लघु कविताओं को मैंने बहुत सशक्त माना है- चाहे वह दोहा रहा हो, शेर, कप्लिट या जापानी हाइकु। बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाने के इस लोभ से मैं अपने को नहीं रोक सका। लंबी कविताएं पाठक को आनंदित कर सकती हैं, लेकिन लघु कविताएं आदमी को झकझोरती अधिक हैं और आदमी को झकझोरना मेरा अपना अदबी मकसद रहा है।''

अभिमन्यु अनत ने 'आत्म-विज्ञापन' के 'कविताएं' खंड में भी अपने कवि और कविता के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातें कही हैं। अनत कहते हैं कि बहरों को सुनाने के लिए मैंने लोहार के हथोड़े का उपयोग किया है तथा मेरी कविताएं 'चिल्लाहट' की कविताएं हैं। अनत में यदि यह हथोड़ा और चिल्लाहट है तथा उसका कवि यदि 'ज्वालामुखी' है तो वह देश के अतीत के कारण नहीं वर्तमान के कारण है, जो पूर्व के समान ही यातना, अत्याचार तथा शोषण से अपने समाज को मुक्त नहीं कर पाया है। अभिमन्यु अनत जनता की इसी 'खामोश यातना' का जन-कवि है। वह एक प्रकार से मनुष्य की मुक्ति-कामना तथा स्वतंत्रा-कामना का राष्ट्र-कवि है।

अभिमन्यु अनत के अब तक चार कविता संग्रह छप चुके हैं तथा पांचवां अप्रकाशित है उसमें 43 कविताएं हैं। इन पांच कविता-संग्रहों के आधार पर अनत की काव्य-प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण किया जा सकता है। कवि के इन संग्रहों में कवि और कविता की परिभाषाएं हैं, उनका धर्म और कर्म है, प्रश्न और उत्तर हैं, आत्म-मंथन और स्थितियों का विश्लेषण है तथा कविता का हेतु और प्रयोजन है। कवि 'शब्द' को परिभाषित करता है। उसके लिए शब्द 'अस्मिता है, 'अतीत' भविष्य, वर्तमान' है, 'शक्ति, भक्ति, विद्रोह और अस्वीकृति' है। शब्द उसका मार्ग-दर्शन करते हैं तथा जीने का सहारा भी देते हैं- अँधेरे में/शब्दों के सहारे/बिन भटके/मैं चलता रहा हूं /हर पल की मौत में/ अपने शब्दों के सहारे/ जी लेता हूं।

कवि अपनी कविता पर दबाव अनुभव करता है। राजनीतिक शक्तियां उससे प्रशस्ति चाहती हैं और यह भी चाहती हैं कि कवि 'पददलितों' का प्रवक्ता न बने। कवि की 'उन्हें गोली न लगे' कविता इस विषय पर लिखी मार्मिक कविता है। कवि की कविता इन शक्तियों के सम्मुख सिर झुकाने को तैयार नहीं है। वह गोली खाने को तैयार है पर वह नहीं चाहता कि जिन पर कविताएं लिखी गई हैं उन लोगों पर गोली चले। कवि 'चापलूस कवि' को भी सहन नहीं करता। वह ऐसे मूर्तिकार एवं कवि का खून करना चाहता है जो भेड़िये जैसे शासक पर एक दूसरा 'पृथ्वीराज रासो' लिख रहे हैं।

अभिमन्यु अनत ने अपनी कविताओं में बार-बार सत्ता के इस भेड़िए और शेर एवं लोमड़ी की चर्चा की है, जो जनता रूपी भेड़ों, मेमनों एवं बकरियों को खा जाना चाहते हैं। अभिमन्यु अनत इस दृष्टि से, नोबेल पुरस्कार विजेता पोलिश कवि चेश्वाव मिवोश के शब्दों में, 'सत्ता का गड़रिया' है, जो जीवन और प्रकृति में मनुष्य के अस्तित्व के लिए जो भी उपयोगी है, उन सबकी रक्षा करता है और अपने समय के भेड़ियों के खतरों से अपने समय और समाज को सावधान करता है। मनुष्य और समाज के लिए वह इसलिए भावना, विचार, इच्छा, स्वतंत्रता, अस्तित्व, अस्मिता, संबंध, इतिहास, पूर्वज, देवता, प्रकृति, वृक्ष, पशु-पक्षी, समुद्र आदि सभी को सुरक्षित एवं पवित्र रखना चाहता है और उनकी देखभाल एवं साज-संभाल करता रहता है। अभिमन्यु अनत की पूरी काव्य-सृष्टि गड़रिये की इसी दृष्टि का प्रतिफल है। इसी कारण कवि अपने आलोचकों को भी क्षमा नहीं करता। इसी संग्रह की 'प्रतिमान' कविता में कवि कविता के आलोचकों 'प्रतिमानों के सौदागर' कहकर उनकी भर्त्सना करता है। कवि की आवाज को चाहे सत्ता अथवा आलोचक दबाए, उसे जब्त करे, परंतु उसे विश्वास है कि कोयलों का झुंड उसके आंगन में उतरेगा और कवि उनके सामने दानों के स्थान पर अपने गीतों को बिखेर देगा और ये कोयलें उन गीतों को चुनकर उन दिशाओं में बिखेर देंगी, जहां किसी के पंजे कवि के गीतों को तथा उसकी आवाज को बंधक न बना सकेंगे- मैं तुम्हारे विस्तृत पंजों की पहुंच के भीतर था/ इसलिए मुझे सलाखों के भीतर लेकर/ मेरी आवाज को तुम जब्त कर लेते थे/ अब तुम ऐसा नहीं कर सकोगे/ क्योंकि कल सुबह जब पूरब से/ कोयलों का झुंड मेरे आंगन में उतरा था/ तो मैंने दानों के बदले उनके सामने/ अपने सभी गीत बिखेर दिए थे/ वे उन्हें चुग कर उड़ गईं उन दिशाओं को/ जहां तुम्हारे पंजे पहुंच नहीं पाएंगे/ जहां अब चप्पे-चप्पे से होता रहेगा,/ मेरे उन दबाए गीतों का गुंजन।

अभिमन्यु अनत दंपति के साथ लेखक कमल किशोर गोयनका (सबसे दाएं)

हिंदी का विश्व और भारतीय संस्कृति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

भारत में जन्मी और पली-बढ़ी हिंदी भाषा आज भारत और भारत के बाहर अनेक देशों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। संख्या की दृष्टि से अंग्रेज़ी और मंदारिन (चीनी) भाषाओं के बाद सबसे अधिक संख्या में हिंदी भाषी ही हैं। भारत से बाहर सौ डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को लेकर अध्ययन अनुसंधान भी किया जा रहा है। सर्जनात्मक साहित्य के साथ ज्ञान सर्जना यानी शास्त्रीय साहित्य भी हिंदी में प्रस्तुत हो रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य भी अपनी पहचान के साथ हिंदी को समृद्ध कर रहा है।

हिंदी भाषा की विविधता इस अर्थ में बड़ी रोचक है कि देश के भीतर और बाहर इसके कई रूप मिलते हैं और हिंदी एक क़िस्म के बड़े भाषा-परिवार का बोध करती है। जहाँ भारत के भीतर वह अवधी, हरयाणवी, ब्रज, हिमाचली, भोजपुरी, कुमायूँनी, बघेली, बुंदेली, मैथिली, कन्नौजी और खड़ी बोली आदि रूपों में मिलती है वहीं फ़ीजी में फ़ीजी बात या फ़ीजी हिंदी, सूरीनाम में सरनामी हिंदी, दक्षिण अफ़्रीका में नेताली और मारीशस में भोजपुरी और फ़्रांसीसी भाषा के संसर्ग से एक नई क़िस्म की हिंदी विकसित हो गई। इसके अतिरिक्त अमेरिका, यूरोप और मध्य एशिया में उद्यमिता के उपक्रम में पहुँचे भारतीयों की भी बड़ी संख्या है और उनके साहित्य में नई आधुनिक चेतना मिलती है। हिंदी के इन सभी रूपों में उन स्थानों की अनुभूति और संवेदना की गूँज सुनाई पड़ती है। हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप कई सदर्भों में निर्मित हुआ। इनमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान विदेश प्रवास का है। प्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में आज से डेढ़ दो सौ साल पहले खेतिहर मज़दूर के रूप में अनेक देशों में पहुँचे थे। भारतीय मूल के ये लोग अनेक सुदूर देशों में पहुँच कर वहीं के हो गए। आज सूरीनाम, दक्षिण अफ़्रीका, फ़ीजी और मारीशस आदि देशों में जो भारतीय हैं उनके पूर्वज चार पाँच पीढ़ियों पहले भारत से गए थे। उनमें ऐसे लोगों की संख्या अधिक थी, जो शर्तबंदी प्रथा के तहत बहला फुसला कर मज़दूरों के रूप में ले जाए गए थे। वे गुलामों का जीवन बिता रहे थे और दुर्दिन में गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित मानस' और 'हनुमान चालीसा' जैसे ग्रंथों से धैर्य और भरोसा पाते थे। उनके लिए भोजपुरी एक तरह की सम्पर्क भाषा बन गई थी। जीवन संघर्ष में धर्म, भाषा और संस्कृति की चेतना का भी विकास हुआ। वर्ष 1913 में मारीशस से 'हिंदुस्तानी' अख़बार शुरू हुआ और 1935 में 'दुर्गा' नाम की हस्तलिखित साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रिका शुरू हुई थी, जिसने इस कार्य में बड़ी भूमिका निभाई थी।

उल्लेखनीय है कि प्रवासी भारतीय भाषा, धर्म, खान-पान, और रीति-रिवाज आदि कई दृष्टियों से भिन्न हैं, परंतु हिंदी उन सबको क़रीब लाती है। उन सबकी मूल राष्ट्रीय पहचान के साथ जुड़ कर हिंदी को एक नया गौरव मिलता है। हिंदी के उत्थान से वे स्वयं को भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़ने का अनुभव पाते हैं। अपनी मिट्टी से दूर प्रवास में भारत उनकी स्मृति में है और वह स्मृति लम्बी भौगोलिक दूरी को पाटती है। इस स्मृति में भारत के प्रति सघन लगाव के साथ संस्कृति की निरंतरता भी बनी हुई है। भाषा इस अनुभूति को सहज आकार देती है। भावनाओं की लिखित अलिखित अभिव्यक्ति के साथ माध्यम से उनकी संवेदनाएँ जीवंत हो उठती हैं।

ऐसे में हिंदी की वैश्विक उपस्थिति में इन देशों की ख़ास भूमिका है। हिंदी को लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चिंतित थे और उसे राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए उद्यम करते रहे। दक्षिण अफ़्रीका से लौट कर भारत के व्यापक दौरे से उन्हें यह लगा कि हिंदी देश के व्यापक जन समुदाय द्वारा बोली समझी जाती है। वह देशवासियों को आपस में जोड़ने में सहायक है। महात्मा गांधी ने वर्धा में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति स्थापित की, जिसके माध्यम से पूरे देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार का उद्यम आरम्भ हुआ, जिसमें भारत के सभी महत्वपूर्ण नेता शामिल हुए थे। आज़ादी मिलने के बाद समिति ने अहिंदी क्षेत्रों और विदेश में भी हिंदी के उत्थान के लिए प्रयत्नशील है।

धीरे-धीरे यह अनुभव किया जाने लगा कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी स्वीकृति मिले, वह संवाद और संप्रेषण की विधायिका बने। उसे विश्व भाषा के रूप में स्वीकृति मिले। इसी परिप्रेक्ष्य में 'विश्व हिंदी सम्मेलन' की परिकल्पना की गई वह वर्ष 1975 में फलीभूत हुई। उस वर्ष नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ था जिसमें मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम और भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उपस्थिति में अनेक संकल्प लिए गए। तब से विश्व हिंदी सम्मेलन के दस अधिवेशन हो चुके हैं। इस वर्ष ग्यारहवाँ सम्मेलन मॉरीशस में 18 से 20 अगस्त को आयोजित हो रहा है। 'लघु भारत' के रूप में प्रसिद्ध हिंद महासागर में स्थित इंद्रधनुषी द्वीप 'मॉरीशस' एक श्रेष्ठ पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात है। डच, फ़्रेंच और ब्रिटिश उपनिवेश के बाद मार्च 1968 में यह स्वतंत्र हुआ। आज अनेक देशों के लोग यहाँ रहते हैं, जिनमें भारतीय मूल के लोगों की बहुलता है। मॉरीशस में हिंदी साहित्य का लेखन ख़ूब विकसित हुआ है। यहाँ के लेखकों की लंबी परंपरा है, जिनमें वासुदेव विष्णु दयाल, जय नारायण राय, ब्रजेंद्र भगत, अभिमन्यु अनत, सोमदत्त बखोरी, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर', रामदेव धुरंधर, ठाकुर दत्त पांडेय, प्रह्लाद रामशरण, मणिलाल, भानमती राजेंद्र अरुण नागदान, इंद्रदेव भोला, राज हीरामन, सुचिता रामदीन, सुमति बुधन आदि ने अनेक विधाओं में महत्वपूर्ण साहित्य रचा है। अभिमन्यु अनत की 'वसंत' पत्रिका ने दो दशकों तक रचनात्मकता को ऊर्जा दी। आज मॉरीशस में काव्य, नाटक और कहानी सभी विधाओं में सक्रिय लेखन हो रहा है। फ़ीजी में कमला प्रसाद मिश्र, विवेकानंद मिश्र, डाक्टर सुब्रमणी, काशी राम कुमुद , बाबू राम शर्मा, रेमंड पिल्लई, केशवन नायर आदि की हिंदी रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। सूरीनाम में अमर सिंह रमण, आशा राजकुमार, चित्र गयादीन, जीत नराइन, राज मोहन, सुरजन परोही, हरिदेव सहतू के नाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे ही दक्षिण अफ़्रीका में किसुन बिहारी, भवानी प्रीतिपाल, शिल्पा नायडू, मालती रामबली, बीना पारसनाथ और चम्पा वशिष्ठ मुनि आदि के साहित्यिक अवदान उल्लेखनीय हैं। भारत के निकट पड़ोसी देशों में भी हिंदी साहित्य रचा जा रहा है और जर्मनी, जापान, इंग्लैंड, अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया, अबू धाबी आदि अनेक देशों में भी हिंदी अध्ययन और साहित्य रचना हो रही है, जिसमें भारतीय मूल के और विदेशी साहित्यकारों का योगदान हो रहा है। अनेक संस्थाएँ और पत्रिकाओं द्वारा हिंदी के उत्थान का प्रयास किया जा रहा है।

यह सम्मेलन इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि आरंभ में लिए गए कई संकल्प पूरे हुए हैं और कई पूरे होने को हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं विश्व विद्यापीठ की स्थापना और एक विश्व सचिवालय की स्थापना। वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना १९९७ में हुई। तब से यह विश्व विद्यालय हिंदी को ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने की दिशा में सक्रिय है। साहित्य, भाषा, अनुवाद, संस्कृति, शिक्षा शास्त्र, प्रबंध विज्ञान, मानविकी और समाज विज्ञान आदि विभिन्न विषयों के अध्यापन के साथ हिंदी के साफ़्टवेयर, कोश, शोधपरक ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय गत वर्ष मारिशस में अपने भवन में स्थापित हुआ और वहाँ से अनेक योजनाएँ भी आरंभ हुई हैं।

ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी के वैश्विक परिदृश्य और भारतीय संस्कृति पर केंद्रित है। हिंदी के प्रति निष्ठा के साथ जुड़ी हुई विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के कुशल नेतृत्व में यह सम्मेलन भाषा और लोक संस्कृति, भाषा प्रौद्योगिकी हिंदी शिक्षण, संस्कृति चिंतन, फ़िल्म और संस्कृति, संचार माध्यम, प्रवासी दुनिया और हिंदी बाल साहित्य जैसे विषयों पर मंथन करेगा। श्रीमती स्वराज हिंदी के लिए कृत संकल्प हैं और संयुक्त राष्ट्र में भी हिंदी की उपस्थिति दर्ज कराने के लिए सन्नद्ध हैं, जिसके परिणाम भी आ रहे हैं। आशा है हिंदी जगत को इस प्रयास से नई ऊर्जा मिलेगी और भारत की वाणी को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नया आयाम मिलेगा।

मॉरीशस गंगा आरती की कुछ छवियाँ

गंगा आरती में उमड़ा जनसैलाब : केशरीनाथ त्रिपाठी, मृदुला सिन्हा, लीलादेवी दुकन लछुमन, जनरल वी.के.सिंह और एम.जे.अकबर भी पहुँचे गंगा तालाब

संयुक्त राष्ट्र महासभा में अटल बिहारी वाजपेयी का हिंदी में ऐतिहासिक भाषण

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन में सर्वाधिक प्रसन्नता का क्षण संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिए अपने हिंदी भाषण को बताया था। वाजपेयी जी का वह भाषण ऐतिहासिक था। संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह पहली बार हुआ था कि किसी भारतीय ने हिंदी में भाषण किया था। श्रद्धांजलि स्वरूप वह भाषण यहाँ अविकल प्रस्तुत है-

सरकार की बागडोर संभाले केवल छह महीने हुए हैं। फिर भी इतने कम समय में हमारी उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। भारत में मूलभूत मानवाधिकार पुन: प्रतिष्ठित हो गए हैं। जिस भय और आतंक के वातावरण ने हमारे लोगों को घेर लिया था, वह अब खत्म हो गया है। ऐसे संवैधानिक कदम उठाए जा रहे हैं कि यह सुनिश्चित हो जाए कि लोकतंत्र और बुनियादी आजादी का अब फिर कभी हनन नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय, वसुधैव कुटुम्बकम की परिकल्पना बहुत पुरानी है। भारत में सदा से हमारा इस धारणा में विश्वास रहा है कि सारा संसार एक परिवार है। अनेकानेक प्रयत्नों और कष्टों के बाद संयुक्त राष्ट्र के रूप में इस स्वप्न के साकार होने की संभावना है। यहाँ मैं राष्ट्रों की सत्ता और महत्ता के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। आम आदमी की प्रतिष्ठा और प्रगति मेरे लिए कहीं अधिक महत्व रखती है।

अंतत: हमारी सफलताएं और असफलताएं केवल एक ही मापदंड से मापी जानी चाहिए कि क्या हम पूरे मानव समाज, वस्तुत: हर नर-नारी और बालक के लिए न्याय और गरिमा की आश्वस्ति देने में प्रयत्नशील हैं। अफ्रीका में चुनौती स्पष्ट है प्रश्न यह है कि किसी जनता को स्वतंत्रता और सम्मान के साथ रहने का अनपरणीय अधिकार है या रंगभेद में विश्वास रखने वाला अल्पमत और किसी विशाल बहुमत पर हमेशा अन्याय और दमन करता रहेगा। नि:संदेह रंगभेद के सभी रूपों

स

का जड़ से उन्मूलन होना चाहिए।

हाल में इजराइल ने वेस्ट बैंक को गाजा में नई बस्तियाँ बसाकर अधिकृत क्षेत्रों में जनसंख्या परिवर्तन करने का जो प्रयत्न किया है, संयुक्त राष्ट्र को उसे पूरी तरह अस्वीकार और रद्द कर देना चाहिए। यदि इन समस्याओं का संतोषजनक और शीघ्र ही समाधान नहीं होता इसके दुष्परिणाम क्षेत्र के बाहर भी फैल सकते हैं। यह अति आवश्यक है कि जेनेवा सम्मेलन का शीघ्र ही पुन: आयोजन किया जाए और उसमें पीएलओ को प्रतिनिधित्व दिया जाए। अध्यक्ष महोदय, भारत सब देशों से मैत्री चाहता है और किसी पर प्रभुत्व स्थापित नहीं करना चाहता।

भारत न तो आणविक शस्त्र शक्ति है और न बनना ही चाहता है। नई सरकार ने अपने असंदिग्ध शब्दों में इस बात की पुनर्घोषणा की है। हमारी कार्यसूची का एक सर्वस्पर्शी विषय जो आगामी अनेक वर्षों और दशकों में बना रहेगा वह है मानव का भविष्य। मैं भारत की ओर से इस महासभा को आश्वासन देना चाहता हूँ कि हम एक विश्व के आदर्शों की प्राप्ति और मानव के कल्याण तथा उसके गौरव के लिए त्याग और बलिदान की बेला में कभी पीछे नहीं रहेंगे।

जय जगत जय भारत!

अटल बिहारी वाजपेयी की कुछ और कविताएँ

अटल बिहारी वाजपेयी केवल स्वाधीन भारत के लोकप्रिय राजनेता ही नहीं थे अपितु हिंदी के लोकप्रिय कवि भी थे। उनकी कविता पुस्तक कैदी कविराय की कुँडलियां तथा मेरी 51 कविताएँ हिंदी समाज में बहुपठित रही हैं। विष्णुकांत शास्त्री के निवेदन पर अटल जी ने अपनी कविताओं का पाठ भी किया था, जिसका कैसेट कुमार सभा पुस्तकालय ने निकाला था। अटलजी की कविता पुस्तक मेरी 51 कविताएँ भी कुमार सभा से प्रकाशित हुई थीं जिसका संपादन शास्त्री जी ने किया था। उस संग्रह से तीन कविताएँ श्रृद्धांजलि स्वरूप प्रस्तुत हैं।

गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए तारों से फूटे वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।
हार नहीं मानूँगा,
रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

झुक नहीं सकते

टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।
सत्य का संघर्ष सत्ता से,
न्याय लड़ता निरंकुशता से,
अँधेरे ने दी चुनौती है,
किरण अंतिम अस्त होती है।

दीप निष्ठा का लिये निष्कंप,
वज्र टूटे या उठे भूकंप,
यह बराबर का नहीं है युद्ध,
हम निहत्थे, शत्रु है सन्नद्ध,
हर तरह के शस्त्र से है सज्ज,
और पशुबल हो उठा निर्लज्ज।

किन्तु फिर भी जूझने का प्रण,
पुन: अंगद ने बढ़ाया चरण,
प्राण-पण से करेंगे प्रतिकार,
समर्पण की माँग अस्वीकार।
दाँव पर सब कुछ लगा है, रुक नहीं सकते।
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

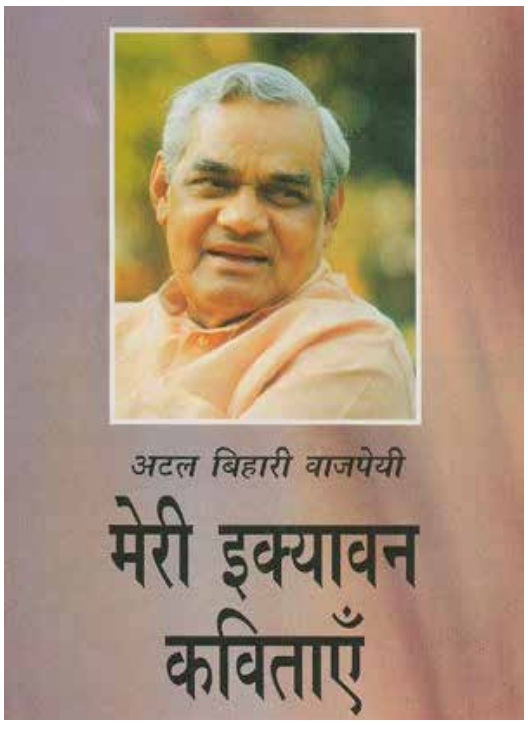

आओ फिर से दिया जलाएँ

भरी दुपहरी में अंधियारा,
सूरज परछाई से हारा,
अंतरतम का नेह निचोड़ें,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंज़िल,
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में,
आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने,
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

जब अटल जी की बात सुनकर पत्रकारों की आँखें नम हो गईं थीं...

राजदीप सरदेसाई

अटल जी एक ऐसे नेता थे, जिनका पत्रकारों के साथ एक लगाव था। वे कभी सेंसरशिप की बात नहीं करते थे,अपनी आलोचनाओं को स्वीकार करते थे, अपनी मुस्कुराहट से कई बार कई इशारे कर दिया करते थे।

मुझे उनके साथ की तीन घटनाएं आज फौरी तौर पर याद आ रही हैं। जब हम उनके साथ लाहौर बस यात्रा के दौरान पाकिस्तान गए थे, तो नवाज शरीफ की ओर से बड़ा भव्य बुफे डिनर आयोजित किया गया था। जब हमने डिनर के बाद उनसे पूछा कि पाक के साथ बातचीत कैसी रही? तो अटल जी ने जवाब दिया कि बातचीत अच्छी रही, पर यहां के गाजर के हलवे में वो बात नहीं जो दिल्ली के गाजर के हलवे में होती है। यही खासियत थी अटल जी की, कब क्या कैसे कहना है, वो इससे भलीभांति परिचित थे।

इस दौरान का एक और वाकया मुझे याद है। उस यात्रा के दौरान एक शाम पंजाब के गवर्नर के घर सबके लिए चाय पार्टी थी। उस दौरान भारत और पाक के रिश्तों को अटल जी ने एक कविता के जरिये बयां किया था। उस कविता का एक-एक शब्द भावों से परिपूर्ण था, जिस तरह उन्होंने अपनी स्पीच के माध्यम से वो कविता गुनगुनाई थी, उसका एक-एक शब्द सुन वहां मौजूद हर पत्रकार चाहे वे पाक का हो या भारत का या किसी और मुल्क का, बड़ा इमोशनल हो गया था। हम सबकी आंखें उस कविता को सुनने के बाद नम थीं।

गुजरात के दंगों के दौरान मेरे द्वारा की गई कवरेज के बारे में उस दौरान जब अटल जी मुझे मिले तो मुझसे बोले कि प्रमोद (महाजन) बता रहा था कि सख्त रिपोर्टिंग कर रहे हो। अपना काम करते रहिए, पर अगली बार मुझे भी डीवीडी भिजवाया कीजिए, ताकि मैं भी आपकी रिपोर्टिंग देख सकूं। यही उनकी खासियत थी कि कभी भी उन्होंने मीडिया पर सेंसरशिप की बात ही नहीं की। 2004 में जब पूरी बीजेपी 'इंडिया शाइनिंग' के मुगालते में थी तो उस दौरान अटल जी का इंटरव्यू करते हुए मैंने उनसे इंडिया शाइनिंग के बारे में एक सवाल पूछा। पर, तब हाल ही में लखनऊ में घटित साड़ी कांड से दुखी वाजपेयी मुझसे बोले, 'छोड़िए इंडिया शाइनिंग, देखिए लखनऊ में क्या हुआ है? कितनी दुखद घटना है कि कितने लोगों के साथ बुरा हो गया है।' कहते-कहते भावुक हो उठे थे वाजपेयी। इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं कि क्योंकि इससे एक बात ये पता चलती है कि अटल जी इस देश के आम आदमी से किस तरह जुड़े हुए थे। उसके दुख-दर्द को इतनी गहराई तक महसूस करते थे। दूसरी बात उनकी राजनीतिक समझ की थी। जहां उस दौर में पूरी भाजपा इंडिया शाइनिंग-शाइनिंग कर रही थी, वो देश की असली तस्वीर समझ रहे थे। वह कई बार प्रमोद से पूछा करते थे कि क्या वाकई पार्टी जीत रही है।

मैं अटल जी के साथ एक यात्रा पर न्यूयॉर्क गया था, तब फ्लाइट में अटल जी मुझसे मिले और पूछा कि क्या पहले भी न्यूयॉर्क गए हो, मैंने जवाब दिया कि दस-पंद्रह साल पहले एक बार गया था पर न्यूयॉर्क को ढंग से देखा नहीं है। तब उन्होंने तुरंत प्रिंसिपल सेक्रेटरी बृजेश मिश्रा को बुलाया और कहा कि इन्हें नॉनवेज पसंद है, न्यूयॉर्क में किस रेस्टोरेंट में बढ़िया नॉनवेज मिलेगा, वो इनको बताइए। हंसते हुए बोले, इनको बढ़िया स्टेक (stack) खिलाइए, ये हमारी तरह मछली नहीं खाते हैं। ये बात इसलिए बता रहा हूं क्योंकि ये दर्शाती है कि अटल के अंदर कितना ह्यूमन टच था। कैसे वो लोगों को अपना बना लेते थे और लोगों के अपने बन जाते थे। पत्रकारों के लिए उनके दिल में खास इज्जत थी। उस समय प्रधानमंत्री के साथ प्लेन में पत्रकार इकनॉमी क्लास में बैठकर जाते थे। लेकिन, प्रधानमंत्री और ब्यूरोक्रेट्स फर्स्ट कलास में बैठते थे। अटल जी हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि जब फ्लाइट टेकऑफ हो जाती थी तो वे पत्रकारों को अपने केबिन में बुलाकर उनके साथ बात करते थे। ये दर्शाता है कि कैसे वह सबको अपना मानते हुए समान समय देने की कोशिश करते थे।

मेरे नाम का अर्थ समझाया था अटलजी ने

अभिज्ञान प्रकाश

मेरी माँ के बाद अपने नजरिये से मेरे नाम का पूरा अर्थ मुझे अटल जी ने ही समझाया था। उन्होंने बताया था कि अभिज्ञान का मतलब होता है पहचान और यही वजह है कि पुराने समय में विश्वविद्यालयों में आईकार्ड को अभिज्ञान पत्र कहा जाता था। संस्कृत और पालि भाषा में अभिज्ञान को अभिक्षनान बोला जाता है। मेरे नाम का विश्लेषण करते हुए अटल जी ने बताया था कि कालिदास ने अपनी प्रसिद्ध कृति का नाम 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' क्यों रखा। इसके पीछे की वजह यह थी कि शकुंतला दुष्यंत का प्यार थी और इस प्यार की पहचान उनका बेटा भरत था, जिसके नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। इसलिए, शकुंतला की पहचान बताने वाली कृति का नाम अभिज्ञान शाकुंतलम् रखा गया। अटल जी को घूमने का काफी शौक था। छुट्टियों में जब भी वह मनाली जाते थे तो मैं भी उनके साथ जाता था। इसके अलावा अटल जी के प्रधानमंत्री रहते हुए मैंने उनके साथ काफी विदेश यात्राएं भी की हैं। मैं पहला पत्रकार था जिसने पोखरण की खबर ब्रेक की थी। इस मामले को लेकर जब पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई थी तो अटल जी ने मजाक में कहा भी था कि आपके पास तो सारी खबरें पहले ही आ जाती हैं। जब भी कभी अटल जी मूड में होते थे तो मुझे अभिज्ञान शाकुंतलम् कहकर बुलाते थे। आज राजनीतिक दलों में जिस तरह का वीआईपी कल्चर है, वे इसके सख्त खिलाफ थे। जिस तरह आज नेताओं से मिलना मुश्किल है, वैसा अटल जी के समय में कभी नहीं रहा। उनसे आराम से मुलाकात हो जाती थी। मुझे अभी भी याद है कि एक बार गलती से अटल जी के सुरक्षाकर्मी का पैर हमारे कैमरामैन के पैर आपस में टकरा गए थे। सुरक्षाकर्मी के कुछ कहने पर अटल जी ने उसे काफी डाँटा था। उन्होंने कहा था कि भीड़ और धक्कामुक्की में तो ऐसा हो जाता है। जबकि यदि इस तरह का वाकया आजकल के नेताओं के साथ होता तो मुझे नहीं लगता कि वे अपने सुरक्षाकर्मी को डाँटते। यही थी अटल जी की खूबी।

अटल जी की खासियत थी कि वे अपने विरोधियों और आलोचकों के काफी करीब थे। मुझे अभी भी याद है कि आगरा में वार्ता विफल होने के बाद भी उन्होंने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी। अटल जी स्वभाव से काफी सरल थे और कई बातों को हँसते-हँसते कह देते थे। मुझे याद है कि एक बार मुंबई में शिवसेना और भाजपा नेताओं की बैठक होनी थी। उस समय कुशाभाऊ ठाकरे भाजपा के अध्यक्ष हुआ करते थे। जब सभी लोग मुंबई में कमरे में दाखिल हुए तो अटल जी ने मजाकिया लहजे में कहा कि आपके पास यदि बाल ठाकरे हैं तो हमारे पास 'बिना बाल ठाकरे' हैं।